सुनहरा आसमान

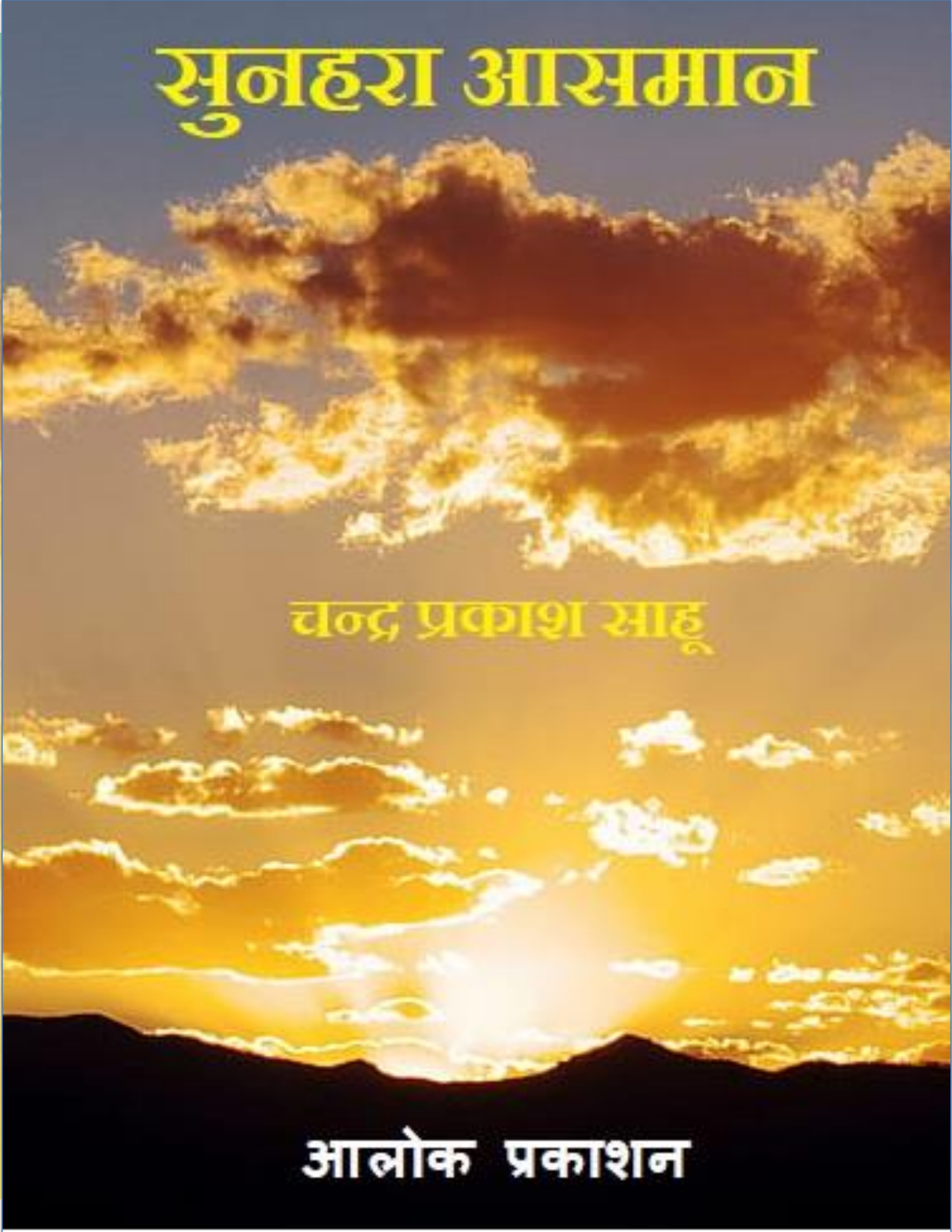

चन्द्र प्रकाश साहू

आलोक प्रकाशन

सुनहरा आसमान

(कविता संग्रह)

चन्द्र प्रकाश साहू

(C) – 2023 चन्द्र प्रकाश साहू

आलोक प्रकाशन

भूमिका

इस 'कविता संग्रह' का रचनाकाल 1990-91 है। उस समय मेरी उम्र 20 वर्ष थी। तब मेरे मन मे एक 'विचार' बड़ी गहराई से कौंधा था और 'उस' विचार को लिखने के लिये मैने अपने कालेज से एक साल के लिये ड्राप लिया था और यह 'कविता संग्रह ' उसी का परिणाम है। आप इसमे से कुछ रचनाओं को मेरे Facebook page मे पहले भी पढ़ चुके हैं, पर बहुत सी रचनाओं को पहली बार पढ़ेंगे। समय निकाल कर एक बार इसे पूरा पढ़ियेगा। इसमे छिपी भावनाएं आपको सराबोर कर देंगी। ऐसी आशा है कि यह रचना आपको कल्पना की किसी और दुनियाँ मे लेकर जायेगी, जिसमे आप अपने सपनों के महल को महसूस कर सकेंगे।

चन्द्र प्रकाश साहू

(1)

ऐ विधाता कहाँ हो तुम कही भी हो पर सुन लेना
जिस काम से तुम खुश हो भगवान
जिस काम से तुम खुश हो प्रभू उसमे सहारा दे देना

ना तो तुम्हें निराकार कहूंगा ना ही कहूँ साकार
तुम हो मेरे पथ प्रदर्शक जग के पालनहार
तुम एक हो चाहे अनेकों पर मुझको ना भुला देना
जिस काम से तुम.....

ये जग दु:ख सागर ही सही तुम तो पार लगा दोगे
तुम ही सबके जीवन दाता हो तुम ही इसे संवारोगे
दु:ख को झेल सकूँ मै प्रभु इतनी शक्ति मुझे देना
जिस काम से तुम.....

कौन है सच्चा कौन है झूठा क्या है उचित क्या अनुचित है
मै बालक हूँ क्या जानू पर मन मेरा निष्छल नित है
ये जग कुछ भी समझे पर तुम न पराया समझ लेना
जिस काम से तुम .....

(2)

स्वच्छंद पक्षियों को आकाश मे
देख यूं कल्पना सी उठी मन मे

मेरी भी अगर होती **पॉ**खें
न बेचैन होती न बरसती आँखें
आस**मां** मे उड़ पहुंचता उनके पास
होंठ मुस्काते पाकर उन्हें पास
उन्हें देख और क्या देखता मै
स्वच्छंद पक्षियों को .....

कल्पनाकाश मे यूं तो उड़ता रहा
सूने दिल मे मै संगीत भरता रहा
पंख बनकर यादें उनकी आयी
अंधेरे मे जैसे रोशनी छायी
काश इतना मनोरम हो सत्य मे
स्वछन्द पक्षियों को .....

फिर यूं लगता मेरी पॉखें न सही
याद करता गगन देख उनकी बातें कही
ये आशा है वो भी उसे देख के
बातें करती हो मुझसे मुझे याद करके
मिलते इस तरह रोज नीरव मे
स्वछन्द पक्षियों को .....

(3)

आंचल छुड़ा कर तुम यूँ खिलखिला कर
अब न छुपाओ मै दिलदार तेरा
झुकी पलकें तेरी ये इजहार करती
तेरे दिल मे अब तो है अरमान मेरा

कुछ भी नही थी ये मेरी जिन्दगी भी
मेरी खुशनशीबी है मुलाकात तुमसे
सदा साथ मेरे है तेरा ही साया
मेरी जिन्दगी मे तुम आयी हो जब से
नही है अंधेरा अब संसार मेरा
झुकी पलकें तेरी .....

तारीफ तुम्हारी जो जुबां पे न आयी
ये न समझना मै करता नही हूँ
धरती से अंबर से तुम पूछ लेना
तुम्हें देखकर मै न देखा कहीं हूँ
क्या तुम न करती थी इंतजार मेरा
झुकी पलकें तेरी .....

(4)

वो सुहानी सी बेला कभी आयेगी
गुनगुनायेंगे हम साथ होगी कोई

उठती है दिल मे तड़प सी मगर
मै तन्हा हूँ कोई नही हमसफर
साथ वो होगी फिर प्यास न रह पायेगी
वो सुहानी सी .....

वो मूरत है जैसी ख्वाबों मे बसी
नही पास है पर वो होगी कहीं
साथ लेकर बहारों को वो आयेगी
वो सुहानी सी .....

रूक न सके जब बुलाऊं उसे
मुझे जान ले मै समझ लूं उसे
दिल मे अरमाँ लिये पास वो आयेगी
वो सुहानी सी .....

(5)

जैसे गुलाब है ये जिन्दगी है
कांटे यहाँ तो यहीं फूल भी है

खुशी भी न होगी गर गम ही ना हो
गम-ए-जिन्दगी से तू मायूस ना हो
अंधेरा यहाँ तो यहीं रोशनी है
कांटे यहाँ तो .....

ये माना कि है जिन्दगी बेवफा
दे जायेगी ये जाने कब ही दगा
पर खोना नही कुछ करना भी है
कांटे यहाँ तो .....

जहाँ को बता दो नही खोखले हो
तुफां से टकरा सहित हौसले हों
दीवारें यहाँ तो यहीं राह भी है
कांटे यहाँ तो .....

(6)

खत ने किया जो दिल की
हालत क्या तुम्हें बतायें
जिधर भी देखूं मुड़ कर
मुझे बाहें तेरी बुलायें
हसरत लिये थी दिल मे
और तुमने किया इशारा
झूम उठी हूँ अब मै
जान के हाल तुम्हारा
मन मे है उमड़ती उमंगें
कब तू पास मे आये
जिधर भी देखूं .....

ये हवा खींच ले जाती
आंचल को संभालूं कैसे
हर बार सेवारूं फिर भी
मुखड़े पे बिखरती जुल्फें
ये पवन शरारत करके
संदेश तेरा ही सुनाये
जिधर भी देखूं .....
मै तुझे डूब रही हूँ

है दिल तेरा मधुबन सा
करूं तुम्हें समर्पित जीवन
अरमान ये मेरे दिल का
किस मोड़ पे जाने तुम से
अब मुलाकात हो जाये
जिधर भी देखूं .....

(7)

सूनी मेरी दुनिया न सूनी रहेगी
मुझे मेरी मंजिल मिल के रहेगी
जब उनका सहारा हमको मिलेगा

मालूम नहीं उनमे क्या देखा है मैने
भले वो नही मेरी लगती पर ऐसे
मै कैसे कहूंगा जब मुझसे मिलेगी
सूनी मेरी दुनिया .....

क्षण भर मे वो तो मेरे पास होगी
कभी जल्द ही जैसे अंबर मे होती
मगर मेरी दुल्हन वो बन के रहेगी
सूनी मेरी दुनिया .....

किन्तु उलझनों मे फंसा जा रहा हूँ
मै डूब रहा हूँ न उबर पा रहा हूँ
तूफानों की आंधी पर थम के रहेगी
सूनी मेरी दुनिया .....

(8)

“खिलती मुस्काती वो मेरी महबूबा होगी
फूलों सी नाजुक वो चंचल दिलरुबा होगी”

“डोली सजेगी मेरी मेरा वो साजन होगा
प्यार की खुशबू से महकता आँगन होगा"

“उनकी ज़ुल्फ़ों को फूलों से सजाऊंगा
झूले मे बिठाकर मै झूला झुलाऊंगा
मेरे गले मे उनकी बाहों की माला होगी
खिलती मुस्काती वो....."

“बगिया मे बैठकर हम सपने सजायेंगे
सपनों की दुनियाँ मे हम दोनो खो जायेंगे
उस दुनियाँ का इस दुनियां मे आवन होगा
डोली सजेगी मेरी ....."

“अपना इक छोटा सा प्यारा संसार होगा
होगी जगह ऐसी जहाँ पे केवल प्यार होगा
खुश रहेगी मुझसे वह न खफा होगी
खिलती मुस्काती वो ....."

“वो रहेगा पास फिर सावन न तड़पायेगा
बिजली जब चमकेगी मुझे सीने मे छुपा लेगा
प्यार की छाया मे मौसम मनभावन होगा
डोली सजेगी मेरी ....."

“खिलती मुस्काती वो ....."

“डोली सजेगी मेरी ....."

(9)

मेरी दुआ वो बहना

कभी खाली न जायेगी
जिस घर मे तू होगी
वहां रौनकता आयेगी

ढेर सी खुशियाँ तेरे
आंचल में रब भर देंगे
खुशियाँ देने को हरदम
वे तेरे साथ रहेंगे
बचपन से तूने बांधी
राखी तू ही बांधेगी
जिस घर मे .....

संग संग खेला हमने
घर आंगन और द्वार मे
यहाँ को सूनी कर चल
लोगों तुम ससुराल मे
फिर कौन लड़ेगा हमसे
जब तू चली जायेगी
जिस घर मे .....

अपनों से मेरी बहना
रिश्ता कब टूटता है
रहो दूर कितनों भी
संग स्नेह तो रहता है
डोली मे चढ़ कर
तू ससुराल जायेगी
जिस घर मे .....

(10)

ये रात अब क्या गाने लगी
क्यों दिल मे हलचल मचाने लगी

वो कहानी भले ही अधूरी थी
मगर कब की खतम हो चुकी थी
ये रात क्यों फिर सुनाने लगी
क्यो दिल मे.....

साथ मिलना था जिनका हमें
ये गम ही मिला उनका हमें
आज फिर याद उनकी सताने लगी
क्यों दिल मे .....

आज क्यों रात ढलती नहीं है
बेचैनी दिल की टलती नहीं है
बुझी राख फिर से तपाने लगी
क्यों दिल मे .....

(11)

किसी मोड़ पर हम तुम से मिले थे
दिल मे कितने फूल खिले थे
पैरों के नीचे मगर रौंद डाला
दर्द न जाने बेदिल जमाना

हम तुम हैं पंक्षी पिंजरे के
ऑंसू हमारे कोई न देखे
सब तो मगन हैं मस्ती मे अपने
हमको जकड़ के चंगुल मे अपने
नाजुक दिल मे भरी थी अरमाँ
पैरों के नीचे .....

हम गम मे रोते जग बेरहम है
मिलना न होगा ये कैसा करम है
सपनों मे हमने घर जो देखा
कितनी खुशी थी तुम थे मै था
हमने संवारा कितना सुहाना
पैरों के नीचे .....

मेरी फिकर तुम कभी मत करना
जहाँ भी रहे तू सदा मुस्कुराना
अब तो ये हिम्मत जुटानी ही होगी
यादों को मेरी भुलानी ही होगी
पलकों मे बिठाता तुझको जानम
पैरों के नीचे.....

(12)

सो जा

सो जा मुन्ना राजा

आ जा निदिया आ जा

मेरा लाला निदिया मे

पहुंचोगे ऐसी दुनियाँ मे

पंख लगेंगे हाथ मे तेरे

उड़ना तुम आकाश मे

तू जल्दी से जा

सो जा सो जा .....

परियां रहती हैं वहां

बादल उड़ते हैं जहाँ

उनके संग मे खेलना

फिर गोदी मे बैठना

चल नन्हे पैरों से उन्हें

अपनी चाल दिखा जा

सो जा सो जा .....

(13)

तुम्हारी निगाहों का सहारा लिये हैं
तुम्हें अपने दिल मे बसाये हुये हैं
मगर बेवफाई का इल्जाम कैसा

हकीकत की तुमको होती खबर तो
हमारी शराफत को ये तोहफा न देते
ये कैसी मुहब्बत कि ऐतबार न था
तेरा साथ हम तो निभाये हुये हैं
तुम्हें अपने दिल .....

मुहब्बत की खुशबू मिली है तुम्ही से
तुम्हारी रूखाई को कैसे सहेंगे
कभी प्यार से तुम देखोगे फिर से
ये ऐतबार हमको जिलाये हुये है
तुम्हें अपने दिल .....

(14)

नारी ही सबकी माता है उसको कब तक रोना होगा
बाजार मे बेचोगे कब तक सेज पे यूं सोना होगा
नाचूॅगी कब तक मुझको महफ़िल मे आना होगा
औरत हूँ क्या जुर्म यही है उत्तर बतलाना होगा

दिल को चकनाचूर किया
कमजोर समझ मजबूर किया
चोट मगर जो दिल मे लगी
सीने मे आग उगलने लगी
रो कर मै न गुजारूंगी
उसको मै सबक सिखा दूंगी
क्या कर सकती हूँ दुनियाँ मे मुझको बतलाना होगा
नाचूंगी कब तक .....

ऑखों मे सुनहरे सपने थे
सिंदूर मांघ मे सजने थे
पर किस मोड़ पे छोड़ा है
किस जग से नाता जोड़ा है
प्यारा सपना चूर हुआ अब
दुश्मन ये संसार हुआ अब
हमे सारी जंजीर तोड़ कर अब आगे आना होगा
नाचूंगी कब तक .....

भरेगा जब भी घड़ा पाप का
बांध टूटेगा सहन शक्ति का
फिर जाम कभी न छलकेगा
न जिस्म हमारा बिखरेगा
घुंघरू न बंधेगी पांवों मे
इज्जत न लगेगी दांवों मे
हम पे किये सब ज़ुल्मों का बदला भी चुकाना होगा

नाचूंगी कब तक .....

(15)

मेरी दिलरुबा पास मेरे अब आयेगी
हम दोनों फिर प्यार की बातें करेंगे

पार किया है मैने आँसू की धारा
मिल ही गया मुझको संदेश का एक सहारा
जिन्हें खोजती आँखें मेरी वो मिल जायेगी
मेरी दिलरुबा पास .....

दिल की बातें होगी कुछ न छिपा होगा
हम दोनो के बीच मे कोई भेद ना होगा
दिल मे कोई बात कभी न रह जायेगी
मेरी दिलरुबा पास .....

अभी दूर रस्ते मे वो आती होगी
मेरे ख्वाबों मे ही वो खोयी होगी
मुझे देखकर आते ही वो मुस्कायेगी
मेरी दिलरुबा पास .....

(16)

मेरी ऑखें तरस गयी पर तुम नही आये
भिगो दी इन्हें अश्कों ने मगर तुम नही आये

पल भर न छोड़ने का वादा था मगर
तन्हा चले इतना सफर तुम नहीं आये

आहट से बढ़ गयी थी दिल की धड़कन
तड़पता रहा दिल मगर तुम नही आये

याद क्या अब तक न आयी मेरी
तुम्हें हर वक्त बुलाया मगर तुम नही आये

आज भी पलकें बिछायी हैं राह मे
ढल गयी है शाम मगर तुम नही आये

मुहब्बत भरी शरारत मुझे याद है मगर
किस्मत को लग गई नजर तुम नही आये

(17)

तुम तक पहुंचने का
साधन मिला है
मुझे मेरे जीने का
मकसद मिला है

मेरे वास्ते है ये
जान जाओगे तुम
मुझे दिल मे लाकर
गुनगुनाओगे तुम
तुम्हें कुछ सुनाने का
मौका मिला है
मुझे मेरे जीने .....

जब मै न रहूंगा
मेरे गीत पुकारेंगे
जो मै न दिखा सका
मेरे गीत दिखायेंगे
तेरे संग रहने का
बहाना मिला है
मुझे मेरे जीने.....

मुझे तो तुम से
गिला ही नही है
खुशी हमने पायी वो
मिली तो यहीं है
मुझे माफ करना गर
हमसे गिला है
मुझे मेरे जीने .....

(18)

प्यार के संग इक दिन जां हम तुम रहेंगे
हमने जो देखे सपने वे सच हो जायेंगे

भले दिखे कांटे एक राह तो होगी
आज नही तो कल मिलन हमारी होगी
कहीं क्षितिज मे देखें तुमको दौड़े आयेंगे
हमने जो देखे.....

चमक खुशी की बढ़ती है दु:ख से तप कर
हमने पीया ऑसू आग मे रह कर
तड़प भरे जिन्दगी के दिन बीत जायेंगे
हमने जो देखे.....

चल लेंगे हम जानम मुश्किल राहों मे
होगा न कम ये प्यार मेरी निगाहों मे
शक्ति प्यार की हम जग को दिखायेंगे
हमने जो देखे .....

बाहों मे तेरी आकर भूल जायेंगे हर गम
ऑखों मे खुशी होगी मुस्कायेंगे हरदम
कुम्हलाये ये फूल तभी खिल जायेंगे
हमने जो देखे .....

(19)

लगता है सपना देखूँ जो भी
मेरी ऑखों मे समाते हैं
मौसम के ये सभी नजारे
दिल मे खुशी भर जाते हैं

चांदनी का ओढ़ के चादर
इस उपवन मे आयी मै
करते स्वागत हिल के पौधे
खुश होकर मुस्कायी मै
ठंडी हवा के झोंके मेरे
तन मन को महकाते हैं
मौसम के ये .....

उपर की डाली भरी फूलों से
मन कहता है छू लूं मै
फूल तो झूले डाल के संग मे
संग पवन के झूलूं मै
फूल गिरा के पेड़ भी मुझपे
अपनी खुशी जताते हैं
मौसम के ये .....

आज का मौसम यहाँ पे लाया
अपने सभी श्रृंगारों को
क्यों न आया चांद भी संग मे
लेकर यहाँ सितारों को
दुधिया बादल नील गगन मे
लगते मुझे बुलाते हैं
मौसम के ये .....

(20)

है ये नाजुक सा मुखड़ा वो चंदा मेरी
आ छुपा लूं लगे न किसी की नजर

नई दुनियाँ मे अब पड़ चुके हैं कदम
ये सपना नही आज सच है सनम
जिन्दगी अपनी रंगीन अब हो गई
खाली तस्वीर अब तू रंग बन गई
साथ मिल कर चलेंगे अब अगला सफर
आ छुपा लूं.....

जो सज गई मेरी किस्मत है तू
प्रतीक्षा थी जिसकी वो सावन है तू
हंसी चेहरा छुपाये हो फिर किस लिये
ऐसे शरमा रही दिल मे धड़कन लिये
अब भी सिमटी हुई जाने क्यों इस कदर
आ छुपा लूं .....

है सागर की लहरों सी हलचल यहाँ
छोड़ कर अपनी पतवार आये हैं हम
गरम ऑधी अब तक जो अंदर मे थी
उसकी कंपन अब होठों पे आने लगी
अब भी झुकी क्यों है तेरी नजर
आ छुपा लूं .....

(21)

बता दो मुझे कब मै तुमसे मिलूंगी
दिख जाओ नही तो मै कैसे रहूंगी

इक चिड़िया भी बैठी है इक डाल में
उसका साथी भी आया उसी डाल मे
प्यार करते वे दोनो अकेली हूँ मै
बैठी पनघट मे अपनी सहेली हूँ मै
बुला लो मुझे मै न देरी करूंगी
बता दो मुझे.....

दिल मे धड़कन थी जैसी तेरे साथ मे
वो धड़कन कहाँ है तेरी याद मे
अब मेरे साथ रो कर पुकारे हवा
मेरी आवाज पर तुम न आओगे क्या
मिल जाओ फिर मै न शिकवा करूंगी
बता दो मुझे.....

नदिया की हलचल मे आवाज है
मेरे दिल की तरह दर्द की साज है
मुस्कुराने की पड़ती जरूरत कभी
तो लगता है डर रो न बैठूं कही
अब तक सहा पर मै कैसे सहूंगी
बता दो मुझे.....

(22)

जीवन को चाहा संवर जाये
वो बिखरता चला गया
हर शख्स अकेला छोड़ मुझे
गम- सागर मे गिरा गया

जागी थी दिल मे साथी की इच्छा
किसी से मुहब्बत की मांगी थी भिक्षा
आग लगी ऐसे घर मे
हम सबको जला गया
जीवन को चाहा .....

मंदिर मे दिल के बिठाया है जिनको
पाकर भी खोया है मैने उन्हीं को
शिकायत कौन सा जाने हमसे
जो बढ़ता चला गया
जीवन को चाहा.....

मेरे ऑसुओं सुन लो न देखेगा कोई
न ऑचल मे ऐसे संभालेगा कोई
चाहत मेरी दफन होगी
दिल मे ही बिठा गया
जीवन को चाहा.....

(23)

नारी तू सृजन की देवी है
तुमसे ही ये चमन खिला
अपनी इस प्यारी धरती को
ऐसा अनुपम श्रृंगार मिला

सुंदरता की प्रतिमूर्ति तुम
कोई कहे क्या परिभाषा
अंतरतम मे भी सुंदर तुम
हो मानवता की आशा
संगीत भरा अपना स्वर तू
नवयुग के साथ मिला
अपनी इस प्यारी .....

उन स्नेहिल ऑखों से तुमने
सबपे ममता छलकायी
बनी प्रेरणा तू पत्नि बन
जीवन सफल बनायी
अंधकार मे ज्योति बनी तुम
तुमसे ही उत्साह मिला
अपनी इस प्यारी .....

तुममें वो सारी शक्ति है
बना दो स्वर्ग जहाँ को
हाथ मे है सबका बचपन
तुम दीप अखंड जला दो
शक्ति स्वयं की जान के जग मे
स्नेह को ही स्थान दिला
अपनी इस प्यारी.....

(24)

मुझे प्यार तुमने किया था कभी
मुझे ही तू सजनी पुकारा कभी
क्या हो गया देखते देखते

भूले क्यों जो तुमने सपने दिखाये
वादे तुम्हें क्या नही याद आये
मजबूरी तेरी बता कौन सी थी
तुम न पहचानते अब ये चुनरी अंगूठी
तेरे प्यार की है निशानी सभी
मुझे प्यार तुमने .....

तुम भूल गये दिन वो जब तू मिला था
क्या जानकर दिल मुझे तू दिया था
बता खुश है क्या तू खुशी छीन कर
पर कैसे रहूं मै तुम्हें भूल कर
तुमसे अलग तो न सोचा कभी
मुझे प्यार तुमने.....

तुम मुझसे नजरें मिलाते नही हो
क्या बात है क्यों बताते नहीं हो
तेरे लिये प्यार व्यापार है क्या
अगर बात ये थी तो क्यों न बताया
क्यों आती मै तुमसे मिलने कभी
मुझे प्यार तुमने.....

(25)

बीत गये दिन इंतजार के अब वो मेरी होगी
मेरे घर मे अब दिल मेरे सदा चांदनी होगी
जो खो गयी थी अब आ गयी है

सच्चे दिल से मैने पुकारा आज वही रंग लाया है
बाद मे इतनी तनहाई के दिन संयोग का आया है
उसी झील के पास मे शामें गुजरेंगी अपनी फिर से
मेरे लिए श्रृंगार करेगी मुस्कायेगी वो फिर से
मेरे घर मे .....

दिल दिया चाहा उनको है और तपस्या की इतनी
मांगो कहेगी सोचा था मै दूंगी तुम्हें चाहो जितनी
कहना चाहती थी वो लाली कान तक उसके आयी थी
सारे जहाँ की खुशियों तो मुखड़े पे सिमट के आयी थी
मेरे घर मे .....

आज मै कहता हूँ दिल तुमसे बात मुझे करने देना
धड़क के तुम पहले जैसा हाँ चुप न मुझे रहने देना
बंधेंगे ऐसे बन्धन मे फिर कैसे छोड़ के जायेगी
सिंदूर से उसकी मांघ भरूंगा वो दुलहन बन जायेगी
मेरे घर मे .....

(26)

माँ सुन मां विश्वास सदा तुम रखना
छोड़ दूँ सारे जग को पर छोड़ू ना तेरे चरणा

तेरी खुशी ही मेरी खुशी है कह तो मै क्या कर दूं
तेरी खुशी के खातिर अम्मा जग को एक मै कर दूं
तेरा आशीर्वाद साथ है फिर न कोई है बाधा
तेरे स्नेहिल ऑचल ने तो सदा ही मुझे संभाला
माँ विनती है ये ममता कम मत करना
माँ सुन मां .....

जब छोटा था इतना सा मै लोरी तुमसे सुनता था
तुम मुझे सिखाती थी चलना मै गोद मे तेरी गिरता था
ऑख मिचौली खेल खेलकर खूब हंसा करते थे
कभी खिलाती तुम मुझको कभी साथ ही खाया करते थे
सभी जनम मे मैया मेरी तुम मेरी माँ बनना
माँ सुन मां .....

इतना दिया और क्या मांगू फिर भी मै ये कहता
जब भी पड़ेगी मेरी जरूरत देश को मेरी माता
माथे पे तिलक लगा देना मां थोड़ा भी न हिचकना
अगर देश के काम आ गया फिर न ऑंसू बहाना
फिर न ऑंसू बहाना मैया फिर न ऑंसू बहाना
माँ सुन मां .....

(27)

भूल कर बीती बातें गले लगा अब जिन्दगी
चमक उठेंगी ऑखें तेरी खुशी यही बस जायेगी

दस्तक देती खुशी तेरी
द्वार दिल के खोल दे
भूल जा उस बेवफा को
आ खुशी तू बोल दे
देख लेना याद उसकी फिर कभी न आयेगी
चमक उठेंगी ऑखें .....

ऐसे रो कर बिता देना
तो कोई जीवन नहीं
न लगी ठोकर जिसे हो
बता यहाँ तू है कहीं
चाहकर देखो हंसी तेरी तुझे मिल जायेगी
चमक उठेंगी ऑखें .....

है संभलना अब तुझे ही
मान तू कायर नहीं
तू सजा ले फिर सजेगी
जिन्दगी तेरी यही
रूठी हुई बहारें फिर पास मे तेरी आयेंगी
चमक उठेंगी ऑखें .....

(28)

तरह तरह के फूल खिले हैं
खुशबू सबकी रखने की
इस धरती से प्यार है कितना
बात नही ये कहने की

अपना है संदेश सदा ही
जो आपस मे मिलाता है
रिश्ता है जिनसे धरती का
उन सबसे स्नेह का नाता है
मिलेगा तुम जितना बांटोगे
प्रेम नही है घटने की
इस धरती से .....

अपना घर है देश हमारा
इसे सदा बचाकर रखेंगे हम
रात अंधेरी फिर न आये
वतन के रक्षक रहेंगे हम
संकट मे हो देश अगर तो
साहस है कुछ करने की
इस धरती से .....

साक्षी है अपना अतीत भी
संस्कृति अपनी कहती ये
हमने शांति सदा चाहा है
प्रेम की पावन धरती मे
शांति को भी इंतजार है
प्रेम ज्योति जल उठने की
इस धरती से.....

(29)

दिल मे तेरे बालम कब से रही मै
बदल क्यों गये तुम हूँ तो वही मै
मेरे लिये तो सब कुछ तुम्ही हो
तेरे लिये क्यों कुछ भी नही मै

देखे कभी तुम न ऑंसू हमारी
ताशों की गुड़िया तुम्हें मुझसे प्यारी
जरा दिल की सोचो सुन मेरे बालम
क्या इक खिलौना हूँ कुछ भी नही मै
मेरे लिये तो.....

हंस कर भी रूठकर मना कर भी देखा
हाथों से बोतल को छीन कर भी देखा
न सोचा मुझे भी जरूरत है तेरी
मुझे थाम लो टूट न जाऊं कही मैं
मेरे लिए तो.....

पुकारूँ तुम्हें सुन दया मुझपे कर दो
गिरती हूँ पैरों पे दु:ख दूर कर दो
ऑंसू लहू के क्यों तुम रुलाते
जरा सुन लो कब से कहती यही मैं
मेरे लिये तो .....

(30)

उलझन थी दिल मे जब हम मिले तो
तूफान दिल की मुखड़े पे आये
यही चाहते हैं मुहब्बत से अपनी
कि मुस्कायें संग हम वो दिन भी लाये

मुलाकात हो गई तनहाई न थी
मगर प्यासे दिल को मुहब्बत मिली है
अब तो मेरा प्यार किया तुने स्वीकार
इसमे तो दुविधा थी वो मिट गयी है
यही प्यार हमको मिलायेगा तुमसे
अभी जैसे इसने हमें पास लाये
यही चाहते हैं.....

भले ही हमारी खामोशी न टूटी
कर ली मगर बात नजरों ने मिलकर
नही भूल सकेगी मेरे साथ तू भी
जो धड़का था दिल भी तेरे साथ मिलकर
इक दूजे की जो बातें थी दिल मे
नहीं कह सके वो दिल ने बताये
यही चाहते हैं .....

विदाई की नजरें भरी ऑसुओं से
वो तस्वीर दिल मे मेरे बन चुकी है
कहीं भूल न जाऊं कहाँ मै खड़ा हूँ
होश के रहते नजरें हटानी पड़ी हैं
गुजरा समय फिर नही लौटता है
मगर ये तमन्ना है फिर लौट आये
यही चाहते हैं.....

(31)

“कल की तरह दिन गुजर जायेगा
आज भी आप यूँ मुस्कुरा दीजिये"

“मेरा भी दिल यूँ बहल जायेगा
आप भी हमसे ऐसे मिला कीजिए"

“मिले आप हैं जब से हमको
देखे बिना चैन आता नहीं
आपकी हमसे नजरें मिलती नही तो
कोई काम हमको भाता नहीं
जरूरत नही हमको कागज की कोई
आप बस ऑखों से ही लिखा कीजिए"

“मेरा भी दिल....."
“कल की तरह....."

“लगती है प्यारी हमे ये जगह भी
यहाँ बैठकर आपको देखते हैं
दिल मे छुपाकर अपनी उमंगें
आयेंगे कब आप ये सोचते हैं
कभी आपसे दिल भरेगा नही
पास ही आप ऐसे रहा कीजिए"

“कल की तरह....."
“मेरा भी दिल ....."

(32)

साजन तेरे इंतज़ार मे हम बैठे हैं कब से
हर आहट चौंका देती अब नैन मिले हैं जब से

बैठी सजकर तेरे वास्ते डूब रहा सूरज है
बीत रही है क्या इस दिल मे तुझको नही खबर है
कौन सा जादू किया है मुझपर चैन नही है तब से
हर आहट चौंका.....

भले यहाँ सूना है साजन डर लगता है फिर भी
जल्दी आओ जानम मेरे यही तो कहता दिल भी
बोलेंगे जब यहाँ देखकर कहूंगी क्या मै जग से
हर आहट चौंका .....

कैसे काटा अब तक उसको बता सकूंगी कैसे
आज अगर मै तुझे न देखूँ दिन काटूंगी कैसे
प्यास बढ़ी है इन अंखियों की मुझे बुलाया जब से
हर आहट चौंका .....

(33)

वक़्त ने जब हकीकत से पर्दा उठाया
स्वयं साथ अपना निभाने लगे हैं

अब कैसे कहूँ है न चाहत कोई
मै संजोकर बनाया इमारत कोई
सभी मिल के उसको गिराने हैं
वक्त ने जब.....

मुझे क्या पता कि यही भूल थी
कि चाहा था मैने थोड़ी सी खुशी
अब हम सजा उसकी पाने लगे है
वक्त ने जब .....

कांटों ने ही दिखाया है रस्ता मुझे
कभी रहने दिया न अकेला मुझे
मुझे अब तो ऑंसू ही प्यारे लगे हैं
वक्त ने जब.....

(34)

दर्पण को देखकर जनाब उसको न तोड़िये
चेहरे पर लगी कालिख मिटाकर तो देखिये

ऊचाइयाँ मिलती हैं मेहनत से ही यहाँ पर
महल खड़ा होता है इंसानियत की नीव पर
हैवानियत के भ्रम को मिटाकर तो देखिये
दर्पण को देखकर .....

कानो से ही सुनते हैं कि बंसी ये कैसे बजती
पानी मे घुली शक्कर ऑखों से नही दिखती
खुदा को दिल मे बिठाकर तो देखिये
दर्पण को देखकर .....

फूल है जो पास मे खुशबू लिया होता
विश्वास ही मौजूदगी का काफी नही होता
प्रेम खुदा पर भी जगा कर तो देखिये
दर्पण को देखकर .....

(35)

जिनकी खुशी को खुशी अपनी माना
वे वादा किये और है भूले निभाना

ज्योति सी जलकर जिन्हें रोशनी दी
धुआं ही केवल अब दिखता उन्हें हैं
सदा से हू मरहम नमक माने अब वो
अपना समझ हमने चाहा जिन्हें हैं
सिवा उनके मेरा कहाँ है ठिकाना
जिनकी खुशी को .....

शायद उन्हें अब न ये याद है कि
जुदाई मे पल भर की तड़पन थी कितनी
जीवन तब गम का साया भी न था
अपनी सुहानी थी संध्या भी कितनी
सोचा भी न था कि होंगे बेगाना
जिनकी खुशी को .....

भले राह से वे भटक ही गये हैं
सांसे भी लूंगी मै उनको बनाकर
हिम्मत मुझे देंगी यादें उन्ही की
मिलेगी जो मैने खोया है पाकर
आयेगा फिर से वो गुजरा जमाना
जिनकी खुशी को .....

(36)

आसमां पे चांद आया खुशबू भी हवा लाई
चांदनी हो मगर दिल मे वो रात नहीं आई
आजाओ आजाओ चली जाये तेरी ये जुदाई

ऑखों के साथ मुख से पुकारा हमने
दिल हे भी सनम तुमको बुलाया हमने
प्यारी सी तुमने अपनी सूरत न दिखाई
आसमां पे चांद .....

चांद ने भी न रहम की मुझ पर
जला रहा है मेरे दिल को हॅस कर
शीतल ये चांदनी भी शीतल न हो पाई
आसमां पे चांद .....

बहलाऊँ मन को कैसे खयालों मे
बातें भी हो कब तक सितारों से
सो गया है जग सारा और है भी तनहाई
आसमां पे चांद .....

(37)

भारत माता

भारतमाता ये हमारा गान है
सब हिन्दुस्तानी तेरी संतान हैं
ये बात तो हर एक को स्वीकार है

बंध सकें एक दूसरे से भावना में
मंदिर और मस्जिद बनायी जाती है
भले पुकारें नाम से भगवान खुदा
धरम प्रेम है उनमें सिखाया जाती है
पर देख हालत आज हम हैरान हैं
सब हिन्दुस्तानी तेरी .....

चुप मत हो देख अपने बच्चों को
ये बात मां समझा तुझको मानेंगे
पूछ इनसे ये लड़ेंगे भाई भाई
या तेरी सलामती को चाहेंगे
अंजाम को क्यों जानकर अंजान हैं
सब हिन्दुस्तानी तेरी .....

कौन ऐसा धर्म है जो ये सिखाता
आदमी दुश्मन हो अपने भाई का
शांति के तो वास्ते है धर्म सब
आधार बना रहे हैं क्यो लड़ाई का
दीपक कहाँ है जिसकी ज्योति ज्ञान है
सब हिन्दुस्तानी तेरी .....

(38)

“जब से तेरा प्यार मिला है
तुझको जीवन सौप दिया है
प्यारा लगता आसमान भी और ये प्यारी धरती"

“जब से तेरा ....."

“तू सूरज और कमल फूल मै देख तुझे खिल जाती"

“जब हम पास मे होते हैं फिर हया कहाँ से आती"

“मै भी अब तक समझ न पायी जाने क्यों अंखियां झुकती"

“प्यारा लगता आसमान ....."
“प्यारा लगता आसमान ....."

“दिल का दौलत पास है जिसके आज वही धनवान
उमड़ के आया प्यार का सागर प्यार पे सब कुर्बान
दूर रहे या पास मे मेरे दिल मे तू हरदम रहती"

“प्यारा लगता आसमान ....."
“प्यारा लगता आसमान....."

“सूना था दिल अब तेरे प्यार की बजती बंशी
सजा उसी के सरगम से है ये जीवन संगीत
इतनी डूब गयी इस दिल मे अनजाने ही थिरकती"

“प्यारा लगता आसमान ....."
“प्यारा लगता आसमान ....."

(39)

हो जायेगा मिलन हमारा कुछ तो मन मे सब्र करो
दीवाना मै तेरा दिलवर दिल से दिल की बात करो

उपदेश तो मैने किया तुम्हें पर मुझमे भी कोई सब्र है क्या
दिल मे इतनी बेसबरी प्रिय पागल भी होऊं तो अचरज क्या
तुम्हीं तो मेरी सांसें प्यारी तुम्ही हो दिल की धड़कन
तुम्हीं तो मेरी स्वप्न सुंदरी सपनो मे आती रानी बन
जब मै चलता चार कदम तब एक कदम तो निकलो
दीवाना मै तेरा.....

याद तुम्हारी दिलवर जब दिल वीणा झंकृत करता
साथ न देता तालु कंठ पर चक्षु अश्रु-स्वर उद्धृत करता
प्रेम-प्यार की रटन करे पर प्रेम-प्यास करता दिल भंजन
भंजित दिल से उठता धुआं ऑसू बन करता मन भंजन
शांति चाहती ऑखें मेरी तश्वीर तो तुम भेजा भी करो
दीवाना मै तेरा .....

आशायें ही जीवन मेरी विश्वास ही मेरा भोजन
विश्वास से वंचित मत करना प्रिय मिलेंगे हम दोनो जन
विश्वास से तेरा रानी मेरी शक्ति प्राप्त होती मुझको
यही तो मेरी सीढ़ी प्यारी चढ़ के पाऊंगा तुझको
उत्साह जरूरी शक्ति के संग उसके लिये एक काम करो
दीवाना मै तेरा .....

(40)

मेरे सपनों का साथी तो आयेगा कोई
कभी दिल मेरा भी चुरायेगा कोई
मै भी उसके दिल मे छा जाऊंगी

यौवन का मुझको अहसास हुआ है
इंद्रधनुषी सपनो का अंबार मिला है
बनाकर मुझे दुलहनिया ले जायेगा कोई
मेरे सपनों का .....

ये दिल मेरा जिस दिन जायेगा
हर अंग मेरा तब खिल जायेगा
देखेगा तो देखता रह जायेगा कोई
मेरे सपनों का .....

यूँ लाज से मै सिमट जाऊंगी
प्यार के रंग मे मै भी रंग जाऊंगी
पकड कर हाथ मेरा बिठायेगा कोई
मेरे सपनों का .....

(41)

मुझको बता दो सनम पाऊंगा तुमको कहाँ
लगता है तेरे बिना सूना ये सारा जहाँ

जिस जगह तू रूठी मनाया था मै
मुस्कुरायी थी तू मुस्कुराया था मै
जगह खंडहर अब हुआ वो मेरी जां
प्रतीक्षा मे मै हूँ तेरी शायद तू आये यहाँ
मुझको बता दो.....

कभी ये लगा वो नादानी तो ना थी
पता ही नही तुमको माना है साथी
अक्सर ही चाहा कि बता दूं मै सबकुछ
कह न पाया मगर मै कहूंगा मिले तू जहाँ
मुझको बता दो .....

अगर प्यार मे ये उलझन न होती
शायद हमारी जुदाई न होती
दे दी है दिल तुम न मालुम अगर हो
दिल मे देना जगह रहूंगा नही तो कहाँ
मुझको बता दो .....

(42)

कह के गये हो तुम जल्दी है आना
तड़पती मै जब से हुआ तेरा जाना

मेरे दिल को चुराया तुमने
चोरी का गम नही है
अपने दिल मे बसाया मुझको
ऑखों मे बसाना भी है
आओ मुझे अपने संग मे ले जाना
कह के गये .....

तेरी यादें चली आती हैं
जब भी बुलाती हूँ
अपने दिल का दर्द
उन्हीं को मै सुनाती हूँ
पर तुम नही आते क्यूँ मुझको बताना
कह के गये .....

कब आकर उन हाथों से
तुम ऑंसू पोछोगे
अपने दिल का हाल भी
मुझे कब सुनाओगे
दोगे कब मुझको फूलों का नजराना
कह के गये .....

(43)

हो मुबारक मुबारक दिन ये
और ये दिन कई बार आये
ऐसे मिलते रहेंगे सदा हम
हाँ ऐसे ही तू मुस्कुराये

बाग मे तेरे जीवन के
फूल खुशियों की हरदम खिले
तय हों सफलता की राहें
वो साहस भी तुमको मिले
हो मुबारक मुबारक .....

पहुंचना हो जहाँ भी तुम्हें
कभी पीछे कदम न हटे
मेरे दोस्त तुम बढ़ते रहना
सामने चाहे मुश्किल बड़े
हो मुबारक मुबारक .....

तेरी लम्बी हो इतनी उमर
हर खुशी हो तेरी हम सफर
नाम रौशन हो तेरा जहाँ मे
ऐसी मंजिल पे पहुँचे कदम
हो मुबारक मुबारक .....

(44)

छोड़ के नादानी दिल झूठे सपनों से निकल आ
नही हे जिसकी मंजिल कब तक तू उसमे चलेगा

अनायास दिल हमे छोड़ कर
साथ उन्ही के उड़ जाता
आसमान मे महल बनाकर
सुंदर सा इक ख्वाब सजाता
पता नही इस दिल को कैसे ये टूट के गिरेगा
नहीं है जिसकी .....

तश्वीर बनी उनके दिल मे
उससे पहले गर मिल पाते
शायद तनहाई के बदले
गीत खुशी के हम गाते
हकीकत ये न बनेगी अब तो सपना ही रहेगा
नही है जिसकी.....

उनका साथ नही मेरा ये
क्यों न समझ लेता दिल भी
एक राह के राही नही हम
आगे क्यों बढ़ता फिर भी
आगे तनहाई मिलेगी तनहा तू कैसे रहेगा
नही है जिसकी .....

(45)

हवा मंद बहती मनोरम
संध्या का एकांत मनोरम

किसी के पास से चल के
पवन प्रिय खुशबू ले आती
उसी के दर्द को लेकर
सुरभि प्रिय गीत सुनवाती
गीतों का ये विश्व मनोरम
हवा मंद बहती .....

जिसके नेह की गर्मी
संध्या देती सूरज बनकर
लाती हैं वे अंबर पे
उसी के केश लहरा कर
केशों के ये मेघ मनोरम
हवा मंद बहती .....

छुपाती लाज की लाली
वे झिलमिल नीले अंचल
उठा देती हवायें चल तब
झलकती चांद बन चंचल
चंदा की ये रश्मि मनोरम
हवा मंद बहती .....

(46)

हे सरस्वती माँ हम पर
ये स्नेह बनाये रखना
मेरे उर के अन्दर मे
तुम दीप जलाये रखना

माथे पे चमकता है वो मुकुट
हाथों मे ज्ञान की वीणा है
उज्जवल प्रकाश की पुंज हो मां
तेरे ही शरण मे जीना है
वीणा का स्वर झंकृत कर
इस ह्रदय को पावन करना
हे सरस्वती माँ .....

तेरे स्वर मे सरगम है माँ
संगीत बना है तुमसे ही
ये विश्व तुम्हारी गोद मे है
हर ज्ञान सिखाया तुमने ही
ममता और ज्ञान का संगम
हम पर यूँ बहाते रहना
हे सरस्वती माँ .....

तेरे चरणों की करूँ सेवा
तेरा वास हो मेरे कर्मों मे
कुछ फूल चढ़ाऊं श्रद्धा का
ये शीश झुका है चरणों मे
हे माँ मेरा ये समर्पण
स्वीकार यूँ करते रहना
हे सरस्वती माँ .....

(47)

तुम भी सीख लो पढ़ना
तुम भी सीख लो लिखना
अब समय आ गया पढ़कर
जीवन संवार लो अपना

कोरे कागज पर ऐसे
कोई क्यों अंगूठा लगा दे
लिखा भी हो तो क्या जानेंगे
पढ़ लिखकर ही तो जानेंगे
अक्षर को जब पहचानेंगे
फिर, बुद्धू हम न बनेंगे
अब तुम भी सीख लो पढ़ना
फिर पढ़ के दस्तखत करना
अब समय आ गया.....

चिट्ठी आई कौन पढ़ेगा
उसका उत्तर कौन लिखेगा
किसी और से क्या पढ़वाना
किसी और हे क्या लिखवाना
कोई भेद जान ले क्या होगा
कोई गलत बता दे क्या होगा
अब तो सीख लो पढ़ना
फिर बैठ के चिट्ठी लिखना
अब समय आ गया .....

(48)

मेरे दिल की तरंगों को तुम पास ही पाओगे
मेरी बातें,दूर भले हो , फिर भी सुन लोगे

तुम हमे शायद न चाहो
या समय ने बदल दिया हो
दोष किसी को हम क्या दें जब तुम्हीं साथ न दोगे
मेरे दिल की .....

स्वयं को छीन लिया तुमने
पर पौधा लगा दिया दिल मे
फल को उसी के भेंट करूँ क्या तोहफा समझोगे
मेरे दिल की .....

तेरा ही इंतजार करूँ मै
तुमसे दिल की बात करूँ मै
तुम्हें पुकारूँ इस आशा से हमे पुकारोगे
मेरे दिल की .....

(49)

तुम पास होते बेक़रारी न होती
फटी जिन्दगी ये हमारी न होती
बहुत हो गया अब ये गम सहते सहते
हमने नही तो पुकारी न होती

प्यार के बदले मे केवल बेवफाई ही मिली
खुशनशीबी की तमन्ना थी जुदाई ही मिली
न दिल ही देते न तुम खेल पाते
दिल पे वो चोटें करारी न होती
तुम पास होते .....

चीखता है दिल ये मेरा मुस्कुरायें कैसे फिर भी
कैसे मै समझाऊँ इसको तुम न आओगे कभी
ये ही समझता या तुम पास आते
हालत ये ऐसी हमारी न होती
तुम पास होते .....

तरस खाओ जुल्म मत कर दिल को मेरे छोड़ दो
जब नही बनता निभाना अब ये नाता तोड़ दो
न दिल छूट पाता न तुम छोड़ देते
तुम्हीं साथ देते लाचारी न होती
तुम पास होते .....

(50)

बहुत तमन्ना थी मेरी पाऊँ तुमको यार
पर शायद मंजूर नही था 'उसको' अपना प्यार

तेरा वो हंसना वो रूठकर मचलना
कभी बहकी बातें कभी संग चलना
थी कितनी प्यारी घड़ियाँ वो झूठी तक़रार
पर शायद मंजूर .....

अब ऐसी तनहाई जो अब तक न आई
मै कैसे बिताऊँ ये तू न बताई
रोज शाम को मिलते थे हम करते थे इंतजार
पर शायद मंजूर .....

छोड़े हो अकेले कभी तो मिलोगे
क्या अब कभी भी तुम न मिलोगे
किये थे वादा सदा रहेंगे हम तेरे दिलदार
पर शायद मंजूर .....

(51)

सजाये जो सपने तुम्हारे लिये हैं
चली आओ अब दिल तुम्हारे लिए है

जीवन मे आई थी खुशियों के संग तू
डाली थी मुझपे ऐसी ही रंग तू
वही रंग फिर अब तुम्हारे लिये है
चली आओ अब.....

मुझे याद है हम मिले थे जहाँ पे
बता दो तुम्ही अब मिलोगे कहाँ पे
चली आओ संग हम तुम्हारे लिये हैं
चली आओ अब.....

सजा लें चलो इक घरौंदा भी मिल के
रहेंगे जहाँ हम तेरे साथ मिल के
बहारों के दिन अब हमारे लिये है
चली आओ अब.....

(52)

मै हूँ तेरा भक्त मुझे कुछ कहने का अधिकार है
मै कानों से सुनूं ये कब तू आने को तैयार है

सिंहासन पर बैठे हो तुम देख रहे हो तमाशा
ऑख कान सब बंद किये हो कौन दिलाये दिलासा
कृष्णा बनकर तुमने ही नारी की लाज बचाई
आज तुम्हारे कानों मे क्या देती न चीख सुनाई
मछली-न्याय को देख पुकारे दिल तुम्हे कई बार है
मै हूँ तेरा.....

अत्याचार से जलती धरती मतलब है क्या तुम्हें नही
धर्म ग्लानि पे आऊंगा क्या भूल गये जो तुमने कही
विध्वंस छोड़ कर हां तुम कुछ और भी तो कर सकते हो
नफरत को मिटाकर दुनिया मे तुम प्यार भी तो भर सकते हो
दुनियाँ बनाकर स्वयं मिटाना क्यों तुमको स्वीकार है
मै हूँ तेरा .....

(53)

ऐ जिंदगी किस मोड़ पे तू आज है लाई
ले जा रही है किस तरफ यह भी न बताई

जिस द्वार को कर बंद तू
अब बढ़ गयी है दूर इतनी
आवाज सुन ले जरा रूक के
उसमे घुली है दर्द कितनी
भुला दी थी कब से तू उसको है मिलाई
ऐ जिंदगी किस .....

है अजब पहेली जिन्दगी तू
पूछती हूँ मै तुझको
डाल दी है किस भंवर मे
हल बता अब तू मुझको
टूटे हुये धागे की कर दूं क्या जोड़ाई
ऐ जिंदगी किस .....

(54)

चाहत को स्वीकार करो फिर
अपने घर लाऊंगा तुझे
दुनियाँ की सुध खो बैठोगी
इतना प्यार करूंगा तुझे

हम दोनो अब इक दूजे को
देख रहे चोरी चोरी
बांध लिया अनजाने मे ही
प्रीत की ये कैसी डोरी
दिल जो कहता सुन ले उसको
पास ही तुम पाओगी मुझे
दुनियाँ की सुध.....

पूजा का मतलब समझा ,जब
सूने दिल मे तू आई
शब्दों मे बतलाऊं कैसे
मेरे प्यार की गहराई
मन मंदिर मे तुम ही बसी हो
आना दिखलाऊंगा तुझे
दुनियाँ की सुध.....

घूँघट के भीतर तू होगी
घर मे बजेगी शहनाई
सभी कहेंगे देख के तुझको
इक चंदा घर मे आई
मेहंदी रचे तेरे हाथों मे
मै ही नजर आऊंगा तुझे
दुनियाँ की सुध.....

(55)

अपनी बातें कह दी तुमने

पर तुमने मै कह न सकी
बंधी हुई हूँ मै तो ऐसे
कहती भी तो क्या कहती

तुमको भी ये होगी शिकायत
कट कर तुमसे मै रहती हूँ
इतने करीबी मे हो फिर भी
ये दूरी बनाये रखती हूँ
ये धागे पर कैसे कटेंगे
जो राह चुनी वो हमने चुनी
अपनी बातें कह दी .....

नहीं छुपा पायी हूँ शायद
गुजर रही क्या दिल मे
तेरा भ्रम तो सच ही था
पर झूठ बनाया है मैने
तुमको बताऊँ या न बताऊँ
दोनो से बात नही बनती
अपनी बातें कह दी .....

इक बंधन ने दिल को बांधा
इक बंधन से पांव बंधे हैं
मै तो तड़प कर सह लूंगी पर
तेरा तड़पना कैसे सहूं मै
आकर तुम भी चले गये पर
मन की बातें मन मे रही
अपनी बातें कह दी .....

(56)

इक नजर प्यार से ऐसे तू देख ले मुझको
जान ले दिल पे मेरे ठोकर जो लगी तुमसे

ये नजर प्यार की फिर से न मिलेगी तुमको

फिर से मिलने का कभी मौका न मिलेगा शायद
मेरा चेहरा भी कभी फिर से न खिलेगा शायद
तुमसे मिलने की ये घड़ी भी कितनी छोटी थी
ये घड़ी भी कभी फिर से न मिलेगी शायद
इक नजर प्यार .....

बांधना चाहता था जिसको न बंधेगा शायद
ये चुभन दर्द की अब से न मिटेगी शायद
याद आयेगी कभी मेरी तो याद कर लेना
ऐसी चाहत भी कहीं जग मे न मिलेगी शायद
इक नजर प्यार .....

(57)

हमे छोड़ कर आप जो जा रहे हैं
हमे दिल से यूँ न भुला दीजियेगा

सपने जो देखो तो पूरा भी करना
आप सपनो मे हरदम न खो जाईयेगा

फूलों के साये जो सब चाहते हैं
आप संघर्ष उनके लिये कीजियेगा

चांदनी रातें नही होती है हरदम
अंधेरी रातों मे दीपक जला लीजियेगा

(58)

वह न मिट सकेगी

जो दिल से बंध चुकी है

बंधन न टूट सकेगा

जो दिल से बंध चुका है

न गम से कभी तेरा पाला पड़ा है

तुम्हें क्या पता दिल की गहराईयां

दिल तो किसी को दिया ही नही

क्या समझोगे तुम दर्द-ए-तनहाईयाँ

सांस भी हमारी

दर्द बन चुकी है

बंधन न टूट .....

कितनी सरलता से तुम कह दिये हो

कि सपना समझ कर भुला दो किसी को

दिल ने जिसे अपना सबकुछ बनाया

कहें कैसे सबसे पराया उसी को

ये जिन्दगी हमारी

किसी की बन चुकी है

बंधन न टूट .....

भूल न सकते भले पर सबकी नजर मे

भूलने का बहाना बनाना ही है

टूटकर भले हम बिखर जायें फिर भी

अरमानों को दिल मे दबाना ही है

ये जिस्म तो हमारी

बेजान बन चुकी है

बंधन न टूट .....

(59)

सबकी है अपनी मंजिल अपने हैं रास्ते
रूकता कहाँ है कोई किसी के वास्ते

तन पे लगी हो चोट तो शायद संभल जायें
मिलता नही है चैन मगर दिल के वास्ते

चाहत है पाने की तो सहना है चोट भी
सहके है मुस्कुराना जीवन कै वास्ते

काजल की भले मंजिल आँखें रही मगर
होती नही हैं आँखें काजल के वास्ते

घायल अगर हुये हैं तो इसमे गुनाह क्या
लहरों का मोल क्या है सागर के वास्ते

टूटा है अगर दिल तो टुकड़े न हो बाहर
केवल हंसी यहाँ है घायल के वास्ते

पैगाम देते दर्द जो कायर को मौत का
लाते हैं शायरी वो शायर के वास्ते

(60)

तेरे प्यार ने तो संवारी है जिन्दगी
लगा था कि मैने पर, सब खो दिया है

स्वयं को जलाकर मेरी की भलाई
तेरे प्यार को मैने समझा बेवफाई
ऑखें खुली मुझको सब कुछ बता दी
लगा था कि.....

डर था जमाने का, दिल मगर दी थी
मालूम तुझे था हाँ मिलन नही अपना
बिछुड़ना ही था आखिर तुम्हें मुझसे जानम
इसीलिए तोड़ा है , झूठा जो सपना
अपनी तरफ से तो खुशी मेरी चाही
लगा था कि.....

मेरे प्यार को तुमने पौधा ही समझा
उखड़ जाये फिर भी कहीं लग सकेगा
मगर क्या पता तुझको गहरी जड़ें थी
उखाड़ा जो तूने अब जखम न भरेगा
गहरा जखम था तो बहुत कुछ मिला भी
लगा था कि.....

(61)

वो दूर आसमां पे धुआं सा उठ रहा है
संध्या मे आज चलकर वो कौन आ रहा है

नीला सा एक चादर बिखरी पड़ी है लाली
मुख को छुपाये जैसे अब सो रहा है कोई
ये रूप बना किसका फिर से बिखर रहा है
वो दूर आसमां .....

अंबर पे दिख रही है फूलों से सजी राहें
हाथों मे फूल लेकर गुजरा हो कोई जैसे
आहट है जाने किसकी , कोई स्वर सा गूंज रहा है
वो दूर आसमां .....

अग्नि सी जल रही है पश्चिम के पत्थरों मे
अब आग लग चुकी है जैसे किसी हृदय मे
उजाला कहीं से मेरे सीने मे आ रहा है
वो दूर आसमां .....

(62)

इक भोली सी सूरत मुझे जो मिली
एक संगीत दिल मे जगा दी
उनके दिल की हालात को अब
उनकी ऑखों ने हमको बता दी

लाख नजरें चुराये वो हमसे मगर
पूछ लो उनसे मिलने जाते हैं हम
उनके ख्वाबों मे भी

इस महफ़िल मे है वो शमां भी कहीं
ये पता भी है वो हमसे छुपती भी है
वो मचलती भी है
अनजान सी बन भी जाये मगर
उनके दिल का पता जान लेते हैं हम
उनकी ऑखों से ही
पूछ लो उनसे .....

कभी शरमा के वो पास आती नही
कभी घबरा के दूर हटती भी है
वो संभलती भी है
महफ़िल मे चुप हूँ ये सब जानकर
यहाँ क्या कहूँ बातें करते भी हैं हम
उनकी ऑखों से ही
पूछ लो उनसे .....

शाम होती है जब ,रात होती है जब
मेरी यादों के दीपक जलाती भी है
साथ गाती भी है
वो छिपाती है मुझसे ये बातें मगर
उनके हर राज को जान लेते है हम

उनकी ऑखों से ही
पूछ लो उनसे .....

(63)

“देखो मत ऐसे तुम मुझको
तुमसे न मुहब्बत कर बैठूं"

“लहरा के चलो मत ज़ुल्फ़ों को
कहीं तुमसे दिल न लगा बैठूं "

“नजदीक से जब तू गुजरता है
तो धड़क उठता है जिया मेरा
कभी सोच के डर लग जाता है
कि ये क्या हाल हुआ मेरा
पास मे तुम आया न करो
कहीं सर अपना न झुका बैठूं"

“लहरा के चलो मत ....."
“देखो मत ऐसे तुम ....."

“तुमको न इशारा कर बैठूं
तिरछी न करो तुम लहरों को
बस इतना उपकार करो अब
होश मे रहने दो मुझको
पास मे तुम न रहो ऐसे
कही तुमको गले न लगा बैठूं"

“देखो मत ऐसे तुम ....."
“लहरा के चलो मत ....."

(64)

स्वप्न लोक से आई हुई तुम
मेरे मन को भा गयी
कोमलता की देवी बनी हो
चुपके से दिल मे समा गयी

मन तेरा निर्मल है जैसा
तुम भी बनी पावन वैसी
रह-रह कर जो छू लेती है
तुम वो चन्द्र किरण जैसी
जब से दिल मे तू आई है
मन मे सपने जगा गयी
स्वप्न लोक से .....

फूलों की माला पहना कर
महकायी हो मन को मेरे
जीवन भर अब साथ निभा कर
महका दो जीवन को मेरे
गंगा की पावन लहरों सी
अब तू मुझमे समा गयी
स्वप्न लोक से .....

(65)

मेरी जिंदगी का हर एक लम्हा
तुम्हारे लिए बस तुम्हारे लिये है
तेरा प्यार पाऊँ या नफरत तुम्हारी
पर मेरी दुआयें बस तुम्हारे लिये है

पाना ही तुझको प्यार नही है
पाने की तमन्ना पर दिल मे बसी है
मागूंगा नही मै गर न दे सको तो
मगर अच्छा होगा तुम दे सको तो
मेरी जिंदगी का .....

रंग तो दिया तूने प्यार के रंग मे
इतना तो कह दो अब रहेंगे संग मे
ज्यादा कोई तुमसे न वादा करूंगा
तेरे लिये दिल है बस इतना कहूँगा
मेरी जिंदगी का .....

मेरा दिल तो कहता वही तुम कहोगी
जीवन के सफर मे सनम तुम रहोगी
रह गये तुम्हारे क्यो होठ हिलकर
देख मुझे झुकती पलकें उठाकर
दिल तेरा धड़क कर कुछ तो कह रहा है
मुझे भी बता दो वो क्या कह रहा है
मेरी जिंदगी का .....

(66)

है प्यार की राहें कदम बढ़े हैं
पीछे अब न हटाना
सावन है साथ मे तुम भी पास मे
देखो कितना सुहाना

संग मे प्यार के आया दिल मे
भय कैसा अनजाना
दिल धड़क रहा कोई खींच रहा
मै कैसे चलूंगी बताना

पता नही क्या तुमको
हम दिल मे बसा के तुमको
बरसों से चाह मे बैठे
तू अभी मिली है मुझको

तुमको पहचान लिया है
तुम्ही से प्यार किया है
खुशी मिली है मुझको
दिल ये तुम्हें दिया है

कौन सा वो दिन हमको दिया दिल
सनम हमे ये बताना

कब से राह मे तेरी चाह मे
मै आई न जाना

तुम पास जरा सी आओ
अब तो तुम मत शरमाओ
वर्षा की मधुर फुहारें
जरा प्रेम गीत सुन जाओ

तेरे साथ रहूंगी मैं कैसे
तुम मुझे सताते हो ऐसे
तुम घेर रखोगे मुझको
फिर काम चलेगा कैसे

हम से छुपाकर तुम मुस्काकर
सोच रही क्या बताना

बात है कैसी तुमको ये भी
होगा क्या बतलाना

दो प्रेमियों का मिलना
मुश्किल बड़ा है सजना
मै चाहती हूँ दिल से
पर होगा बिछूड़ के रहना

तू पास मेरे ही रहेगी
दुनियाँ चाहे न कहेगी
पूरे अरमान भी होंगे
और जीत प्यार की होगी

हम क्या बतायें कांटे बिछाये
जालिम है ये जमाना

जान लो तुम भी नही है मुमकिन
प्यार की ज्योति बुझाना

(67)

तुम्हें पा के दिल जो धड़कता रहा
खुशियाँ भी दिल से छलकती रहीं
जज्बात को कोई समझे जहाँ
साजन मेरे मुझको ले चल वहीं

दिल के अंदर से मेरे ये कहता कोई
जुर्म न हो जहाँ दिल लगाना कोई
कहीं पर तो होगा ऐसा जहाँ
साजन मेरे मुझको ले चल वहीं

जहाँ प्यार के कोई दुश्मन न हो
जहाँ पर कही ऐसे ताने न हो
हमको भी देंगे दुआयें जहाँ
साजन मेरे मुझको ले चल वहीं

भले ही बुलायें ये कलियाँ हमें
नही साथ देंगी ये गलियां हमें
खुशी से हमारे भी खुश हो जहाँ
साजन मेरे मुझको ले चल वहीं

(68)

जरा धीर धरो मेरे दिल
है पास मे वो महफिल
हर पल तू जिसे चाहा
मिल जायेगी वो मंजिल

ऊंची पहाड़ की वो चोटी
जिसके उपर जाना है तुझे
जिसमे चलकर पहुचेगा वहां तू
उस राह को भी पाना है तुझे
कभी दूर थी वो तुझसे
अब तो वो नही मुश्किल
हर पल तू.....

मेरे भीतर की छुपी शक्ति ने
हर बाधा को पार किया
वो साथ मे आयेगी मेरे
जिसका अब तक इंतजार किया
तू झूम उठेगा दिल
अब दूर नही वो दिन
हर पल तू .....

(69)

हे सरस्वती मां, हम पर, ये स्नेह बनाये रखना ।
मेरे उर के अंदर मे, तुम दीप जलाये रखना ।।

माथे पे चमकता है वो मुकुट, हाथों मे ज्ञान की वीणा है
उज्ज्वल प्रकाश की पुंज हो मां ,तेरे ही शरण मे जीना है
वीणा का स्वर झंकृत कर, इस हृदय को पावन करना।
हे सरस्वती मां .....

तेरे स्वर मे सरगम है मां, संगीत बना है तुमसे ही
ये विश्व तुम्हारी गोद मे है, हर ज्ञान सिखाया तुमने ही
ममता और ज्ञान का संगम, हम पर यूं बहाते रहना ।
हे सरस्वती मां.....

तेरे चरणों की करूं सेवा, तेरा वास हो मेरे कर्मों मे
कुछ फूल चढ़ाऊं श्रद्धा का, ये शीश झुका है चरणों मे
हे मां मेरा ये समर्पण, स्वीकार यूं करते रहना ।
हे सरस्वती मां.....

(70)

प्यार के संग इक दिन ,जां हम तुम रहेंगे।
हमने जो देखे सपने ,वो सच हो जायेंगे।।

भले दिखें कांटें ,एक राह तो होगी
आज नही तो कल ,मिलन हमारी होगी
कहीं क्षितिज मे देखें तुमको ,दौड़े आयेंगे।
हमने जो देखे सपने .....

चमक खुशी की बढ़ती है ,दुःख से तप कर
हमने पीया आंसू, आग मे रह कर
तड़फ भरे जिन्दगी के दिन बीत जायेंगे।
हमने जो देखे सपने .....

चल लेंगे हम जानम, मुश्किल राहों मे
होगा न कम ये प्यार , मेरी निगाहों मे
शक्ति प्यार की हम, जग को दिखायेंगे।
हमने जो देखे सपने.....

बाहों मे तेरी आकर, भूल जायेंगे हर गम
आंखों मे खुशी होगी, मुस्कायेंगे हरदम
कुम्हलाये ये फूल ,तभी खिल जायेंगे
हमने जो देखे सपने.....

(71)

वो दूर आसमां पे, धुंआ सा उठ रहा है
संध्या मे आज चलकर, वो कौन आ रहा है

नीला सा एक चादर, बिखरी पड़ी है लाली
मुख को छुपाये जैसे, अब सो रहा है कोई
ये रूप बना किसका, फिर से बिखर रहा है।
वो दूर आसमां पे.....

अंबर मे दिख रही हैं, फूलो से सजी राहें
हाथों मे फूल लेकर,गुजरा हो कोई जैसे
आहट है जाने किसकी, कोई स्वर सा गूंज रहा है।
वो दूर आसमां पे.....

अग्नि सी जल रही है, पश्चिम के पत्थरों मे
अब आग लग चुकी है, जैसे किसी हृदय मे
उजाला कहीं से मेरे, सीने मे आ रहा है।
वो दूर आसमां पे .....

(72)

स्वच्छंद पक्षियों को आकाश मे
देख यूं कल्पना सी उठी मन मे

मेरी भी अगर होती पांखें
न बेचैन होती, न तरसती आंखें
आसमां मे उड़ पहुचता उनके पास
होठ मुस्काते पाकर उन्हें पास
उन्हें देख और क्या देखता मै
स्वच्छंद पक्षियों को .....

कल्पनाकाश मे यूं तो उड़ता रहा
सूने दिल मे मै संगीत भरता रहा
पंख बनकर यादें उनकी आयी
अंधेरे मे जैसे रोशनी छायी
काश! इतना मनोरम हो सत्य में
स्वच्छंद पक्षियों को.....

फिर यूं लगता, मेरी पांखें न सही
याद करता गगन देख, उनकी बातें कही
ये आशा है, वो भी उसे देख के
बातें करती हों मुझसे, मुझे याद करके
मिलते इस तरह रोज नीरव मे
स्वच्छंद पक्षियों को .....

(73)

तुम्हें पाके दिल जो धड़कता रहा
खुशियां भी दिल से छलकती रही
जज्बात को कोई समझें जहां
साजन मेरे मुझको ले चल वहीं

दिल के अंदर से मेरे ये कहता कोई
जुर्म न हो जहां दिल लगाना कोई
कहीं पर तो होगा ऐसा जहां
साजन मेरे मुझको ले चल वहीं

जहां प्यार के कोई दुश्मन न हों
जहां पर कहीं ऐसे ताने न हो
हमको भी देंगे दुआयें जहां
साजन मेरे मुझको ले चल वहीं

भले ही बुलायें ये कलियां हमें
नही साथ देंगी ये गलियां हमें
खुशी से हमारे भी खुश हों जहां
साजन मेरे मुझको ले चल वहीं

(74)

मै हूं तेरा भक्त, मुझे कुछ कहने का अधिकार है
मै कानों से सुनू ये कब तू आने को तैयार है

सिंहासन पर बैठे हो तुम देख रहे हो तमाशा
आंख कान सब बंद किये हो, कौन दिलाये दिलासा
कृष्णा बनकर तुमने ही नारी की लाज बचाई
आज तुम्हारे कानों मे क्या देती न चीख सुनाई
मछली न्याय को देख पुकारे, दिल तुम्हें कई बार है
मै हूं तेरा भक्त .....

अत्याचार से जलती धरती, मतलब है क्या तुम्हें नही
धर्म ग्लानि पर आऊंगा, क्या भूल गये जो तुमने कही
विध्वंस छोड़कर हां तुम, कुछ और भी तो कर सकते हो
नफरत को मिटाकर दुनियां से, तुम प्यार भी तो भर सकते हो
दुनियां बनाकर स्वयं मिटाना, क्यों तुमको स्वीकार है
मै हूं तेरा भक्त .....

(75)

ऐ जिन्दगी किस मोड़ पे, तू आज है लाई
ले जा रही है किस तरफ, यह भी न बताई

जिस द्वार को कर बंद तू
अब बढ़ गई है दूर इतनी
आवाज सुन ले जरा रूक के
उसमे घुली है दर्द कितनी
भुला दी थी कब से, तु उसको है मिलाई।
ऐ जिन्दगी किस.....

है अजब पहेली जिन्दगी तू
पूछती हूं मै तुझको
डाल दी है किस भंवर मे
हल बता अब तू मुझको
टूटे हुये धागे की कर दूं क्या जोड़ाई।
ऐ जिन्दगी किस.....

(76)

चाहत को स्वीकार करो फिर, अपने घर लाऊंगा तुझे
दुनियां की सुध खो बैठोगी, इतना प्यार करूंगा तुझे

हम दोनो अब इक दूजे को, देख रहे चोरी चोरी
बांध लिया अनजाने मे ही, प्रीत की ये कैसी डोरी
दिल जो कहता सुन ले उसको, पास ही तुम पाओगी मुझे।
दुनियां की सुध खो .....

पूजा का मतलब समझा, जब सूने दिल मे तुम आईं
शब्दों मे बतलाऊं कैसे, मेरे प्यार की गहराई
मन मंदिर मे तुम ही बसी हो, आना दिखलाऊंगा तुझे।
दुनिया की सुध खो .....

घूंघट के अंदर तू होगी, घर मे बजेगी शहनाई
सभी कहेंगे देख के तुझको, इक चंदा घर मे आई
मेंहदी रचे तेरे हाथों मे, मै ही नजर आऊंगा तुझे।
दुनियां की सुध खो .....

(77)

कह के गये हो तुम, जल्दी है आना
तड़पती मै जब से हुआ तेरा जाना

मेरे दिल को चुराया तुमने
चोरी का गम नही है
अपने दिल मे बसाया मुझको
आखों मे बसाना भी है
आओ मुझे अपने साथ मे ले जाना
कह के गये .....

तेरी यादें चली आती हैं
जब भी बुलाती हूं
अपने दिल का दर्द
उन्ही को मै सुनाती हूं
पर तुम नही आते क्यूं , मुझको बताना
कह के गये .....

कब आकर उन हाथों से
तुम आंसू पोछोगे
अपने दिल का हाल भी
मुझे कब सुनाओगे
दोगे कब मुझको फूलो का नजराना
कह के गये .....

(78)

“इस अंधेरे मे केवल इक शमां तू है
यूं देखते जिन्दगी गुजरे ,ये आरजू है"

“हाथ फेरा है जो जुल्फ मे तुमने
सदा प्यार मिले तुमसे ,ये आरजू है"

“तुम ही तो हो, पहली नजर मे अपना माना था
फिर इंतजार जुदाई का एक जमाना था
साथ रहना अब सदा के लिये
रहें हम तुम ऐसे मिलके,ये आरजू है "

“हाथ फेरा है ....."
“इस अंधेरे मे....."

“जिसमे न हो साया तेरा, ऐसा ख्वाब नही
तेरे साथ से बढ़कर मेरा कोई स्वर्ग नही
सह लूंगी साथ मे हर गम जहां का
बस रहूं मै तेरे दिल मे ,ये आरजू है "

“इस अंधेरे मे ....."
“हाथ फेरा है....."

(79)

तुम पास होते बेकरारी न होती
फटी जिन्दगी ये हमारी न होती
बहुत हो गया अब ये गम सहते सहते
हमने नही तो पुकारी न होती

प्यार के बदले मे, केवल बेवफाई ही मिली
खुशनसीबी की तमन्ना थी ,जुदाई ही मिली
न दिल ही देते, न तुम खेल पाते
दिल पे वो चोटें, करारी न होती ।
तुम पास होते .....

चीखता है दिल ये मेरा, मुस्कुरायें कैसे तब भी
कैसे मै समझाऊं इसको, तुम न आओगे कभी
ये ही समझता, या तुम पास आते
हालत ये ऐसी, हमारी न होती ।
तुम पास होते .....

तरस खाओ जुल्म मत कर, दिल को मेरे छोड़ दो
जब नही बनता निभाना, अब ये नाता तोड़ दो
न दिल छूट पाता, न तुम छोड़ देते
तुम्ही साथ देते ,लाचारी न होती
तुम पास होते .....

(80)

“देखो मत ऐसे तुम मुझको
तुमसे न मोहब्बत कर बैठूं"
“लहरा के चलो मत जुल्फों को
कहीं तुमसे दिल न लगा बैठूं"

“नजदीक से जब तू गुजरता है
तो धड़क उठता है जिया मेरा
कभी सोच के डर लग जाता है
कि ये क्या हाल हुआ मेरा
पास मे तुम आया न करो
कहीं सर अपना न झुका बैठूं ।"
“लहरा के चलो मत....."
“देखो मत ऐसे तुम ....."

“तुमको न इशारा कर बैठूं
तिरछी न करो तुम नजरों को
बस इतना उपकार करो अब
होश मे रहने दो मुझको
पास मे तुम न रहो ऐसे
कहीं तुमको गले न लगा बैठूं"
“देखो मत ऐसे तुम ....."
“लहरा के चलो मत ....."

(81)

सूनी मेरी दुनियां न सूनी रहेगी
मुझे मेरी मंजिल मिल के रहेगी
जब उनका सहारा हमको मिलेगा

मालूम नही उनमे ,क्या देखा है मैने
भले वो नही मेरी , पर लगती है ऐसे
मै कैसे कहूंगा ,जब मुझसे मिलेगी
सूनी मेरी दुनियां.....

क्षणभर मे वो तो मेरे पास होती
कभी जल्द ही जैसे अंबर पे होती
मगर मेरी दुल्हन बन के रहेगी
सूनी मेरी दुनिया .....

किन उलझनों मे फंसा जा रहा हूं
मै डूब रहा हूं, न उबर पा रहा हूं
तूफानों की आंधी पर ,थम के रहेगी
सूनी मेरी दुनियां .....

(82)

“भर जायेगी गोद तेरी ,उस फूल से जो अभी है कली”
“महकेगा अपना घर आंगन ,और यहां की गली-गली”

“उसके लिये ऐसे मै घोड़ा बन जाऊंगा
ऊंगली पकड़ के ऐसे दुनिया घुमाऊंगा
और बैठते हैं थोड़ा, हंसकर अब तू कहां चली"
“महकेगा अपना घर....."
“भर जायेगी गोद....."

“प्यार से गोदी मे, उसको मै खिलाऊंगी
तुतली भाषा सुनकर, उसको गले लगा लूंगी
मन झूमेगा किलकारी से ,गूंज उठेगी सभी गली "
“भर जायेगी गोद..... "
“महकेगा अपना घर....."

“हर राही अपने प्यार पे, ऊंगली दबायेगा"
“इक प्यारा सा नाम ,जग मे धूम मचायेगा"
“सबसे प्यारा फूल होगा , दुनियां मे यही कली"
“महकेगा अपना घर....."
“भर जायेगी गोद....."

(83)

जैसे गुलाब है, ये जिन्दगी है
कांटें यहां तो, यही फूल भी है

खुशी भी न होगी, गर गम ही ना हो
गम-ए-जिन्दगी से तू मायूस ना हो
अंधेरा यहां तो ,यहीं जिन्दगी है
जैसे गुलाब है .....

ये माना कि है जिन्दगी बेवफा
दे जायेगी ये जाने कब ही दगा
पर खोना नही कुछ करना भी है
जैसे गुलाब है .....

जहां को बता दो नही खोखले हो
तूफां से टकरा, सहित हौसले हों
दीवारें यहां तो यहीं राह भी है
जैसे गुलाब है ..... .

(84)

लगता है सपना ,देखूं जो भी ,मेरी आंखों मे समाते हैं
मौसम के ये सभी नजारे,दिल मे खुशी भर जाते हैं

चांदनी का ओढ़ के चादर,इस उपवन मे आई मै
करते स्वागत हिल के पौधे,खुश होकर मुस्काई मै
ठंडी हवा के झोके मेरे,तन-मन को महकाते हैं।
मौसम के ये .....

उपर की डाली भरी फूलों से,मन कहता है छू लूं मै
फूल तो झूले डाल के संग मे,संग पवन के झूलूं मै
फूल गिरा के पेड़ भी मुझ पे,अपनी खुशी जताते हैं।
मौसम के ये.....

आज का मौसम, यहां पे लाया,अपने सभी श्रृंगारों को
क्यों न आया ,चांद भी संग मे,लेकर यहां सितारों को
दूधिया बादल नील गगन से,लगते मुझे बुलाते हैं ।
मौसम के ये .....

(85)

खत ने किया, जो दिल की, हालत क्या तुझे बतायें
जिधर भी देखूं मुड़कर, मुझे बाहें तेरी बूलायें

हसरत लिये थी दिल मे, और तुमने किया इशारा
झूम उठी हूं अब मै, जान के हाल तुम्हारा
मन मे है उमड़ती उमंगों, कब तू पास मे आये
जिधर भी देखूं.....

ये हवा खींच ले जाती, आंचल को संभालूं कैसे
हर बार संवारूं फिर भी, मुखड़े पे बिखरती जुल्फें
ये पवन शरारत करके, संदेश तेरा ही सुनाये
जिधर भी देखूं .....

मै तुझमे डूब रही हूं, है दिल तेरा मधुबन सा
करूं तुम्हें समर्पित जीवन, अरमान ये मेरे दिल का
किस मोड़ पे जाने तुमसे, अब मुलाकात हो जाये
जिधर भी देखूं.....

(86)

तरह तरह के फूल खिले हैं, खुशबू सबकी रखने की
इस धरती से प्यार है कितना, बात नही ये कहने की

अपना है संदेश सदा ही, जो आपस मे मिलाता है
रिश्ता है जिनसे धरती का, उन सबसे स्नेह का नाता है
मिलेगा तुम जितना बाटोगे, प्रेम नही है घटने की
इस धरती से.....

अपना घर है देश हमारा, इसे सदा बचाकर रखेंगे हम
रात अंधेरी फिर न आये, वतन के रक्षक रहेंगे हम
संकट मे हो देश अगर तो, साहस है कुछ करने की
इस धरती से .....

साक्षी है अपना अतीत भी, संस्कृति अपनी कहती ये
हमने शांति सदा चाहा है, प्रेम की पावन धरती मे
शांति को भी इंतजार है, प्रेम ज्योति जल उठने की
इस धरती से .....

(87)

तुम भी सीख लो पढ़ना
तुम भी जान लो लिखना
अब समय आ गया पढ़कर
जीवन संवार लो अपना

कोरे कागज पर ऐसे
कोई क्यों अंगूठा लगा दे
लिखा भी हो तो क्या जानेंगे
पढ़ लिख कर ही तो जानेंगे
अक्षर को जब पहचानेंगे
फिर बुद्धू हम न बनेंगे
अब तुम भी सीख लो पढ़ना
फिर पढ़ के दस्तखत करना
अब समय आ .....

चिट्ठी आई कौन पढ़ेगा
उसका उत्तर कौन लिखेगा
किसी और से क्या पढ़वाना
किसी और से क्या लिखवाना
कोई भेद जान ले क्या होगा
कोई गलत बता दे क्या होगा
अब तो सीख लो पढ़ना
फिर बैठ के चिट्ठी लिखना
अब समय आ .....

(88)

तुम तक पहुंचने का साधन मिला है
मुझे मेरे जीने का मकसद मिला है

तेरे वास्ते है ये, जान जाओगे तुम
मुझे दिल मे लाकर, गुनगुनाओगे तुम
तुम्हें कुछ सुनाने का, मौका मिला है
मुझे मेरे जीने का.....

जब मै न रहूंगा, मेरे गीत पुकारेंगे
जो मै न दिखा सका, मेरे गीत दिखायेंगे
मेरे संग रहने का, बहाना मिला है
मुझे मेरे जीने का.....

मुझे तो तुमसे, गिला ही नही है
खुशी हमने पाई वो, मिली तो यही है
मुझे माफ करना, गर तुमसे मिला है
मुझे मेरे जीने का .....

(89)

मुझको बता दो सनम, पाऊंगा तुमको कहां
लगता है तेरे बिना, सूना ये सारा जहां

जिस जगह तू रूठी, मनाया था मै
मुस्कुरायी थी तू, मुस्कुराया था मै
जगह खंडहर अब हुआ वो मेरी जां
प्रतीक्षा मे मै हूं तेरा, शायद तू आये यहां
मुझको बता दो.....

कभी ये लगा, वो नादानी तो ना थी
पता ही नही तुमको, माना है साथी
अक्सर ही चाहा, बता दूं मै सबकुछ
कह न पाया मगर मै कहूंगा मिले तू जहां
मुझको बता दो.....

अगर प्यार मे ये उलझन न होती
शायद हमारी जुदाई न होती
दे दी है दिल तू न मालूम अगर हो
दिल मे देना जगह, रहूंगा नही तो कहां
मुझको बता दो.....

(90)

आंचल छुड़ा कर, तुम यूं खिलखिलाकर
अब न छुपाओ, मै दिलदार तेरा
झुकी पलकें तेरी, ये इजहार करती
तेरे दिल मे अब तो है, अरमान तेरा

कुछ भी नही थी, ये मेरी जिन्दगी भी
मेरी खुशनसीबी है, मुलाकात तुमसे
सदा साथ मेरे है, तेरा ही साया
मेरी जिन्दगी मे, तुम आयी हो जब से
नही है अंधेरा, अब संसार मेरा
झुकी पलकें ये .....

तारीफ तुम्हारी जो जुबां पे न आयी
ये न समझना, मै करता नही हूं
धरती से अंबर से तुम पूछ लेना
तुम्हें देखकर मै न देखा कहीं हूं
क्या तुम न करती थी इंतजार मेरा
झुकी पलकें ये.....

(91)

उलझन थी दिल मे, जब हम मिले तो,
तूफान दिल के, मुखड़े पे आये
यही चाहते है, मुहब्बत से अपनी
मुस्कायें संग हम, वो दिन भी लाये

मुलाकात हो गई, तनहाई न थी
मगर प्यासे दिल को मुहब्बत मिली है
अब तो मेरा प्यार, किया तुने स्वीकार
इसमे जो दुविधा थी, वो मिट गयी है
यही प्यार हमको मिलायेगा तुमसे
अभी जैसे इसने हमे पास लाये
यही चाहते है .....

भले ही हमारी, खामोशी न टूटी
कर ली मगर बात, नजरों ने मिलकर
नहीं भूल सकेगी, मेरे साथ तू भी
जो धड़का था दिल भी, तेरे साथ मिलकर
इक दूजे की जो बातें थी दिल मे
नही कह सके, वो दिल ने बताये
यही चाहते हैं.....

विदाई की नजरें, भरी आंसुओं से
वो तश्वीर दिल मे मेरे बन चुकी है
कहीं भूल न जाऊं, कहां मै खड़ा हूं
होश के रहते, नजरें हटानी पड़ी हैं
गुजरा समय फिर नही लौटता है
मगर ये तमन्ना है, फिर लौट आये
यही चाहते हैं.....

(92)

नारी ही सबकी माता है, उसको कब तक रोना होगा
बाजार मे बेचोगे कब तक, सेज पे यूं सोना होगा
नाचूंगी कब तक मुझको, महफिल मे आना होगा
औरत हूं ,क्या जुर्म यही है, उत्तर बतलाना होगा

दिल को चकनाचूर किया
कमजोर समझ मजबूर किया
चोट मगर जो दिल मे लगी
सीने मे आग उगलने लगी
रोकर मै न गुजारूंगी
उसको मै सबक सीखा दूंगी
क्या कर सकती हूं, दूनिया मे, मुझको बताना होगा
नाचूंगी कब तक .....
आंखों मे सुनहरे सपने थे
सिंदूर मांघ मे सजने थे
पर किस मोड़ पे छोड़ा है
किस जग से नाता जोड़ा है
प्यारा सपना चूर हुआ अब
दुश्मन ये संसार हुआ अब
हमें सारी जंजीर तोड़कर, अब आगे आना होगा
नाचूंगी कब तक .....
भरेगा जब भी घड़ा पाप का
बांध टूटेगा सहन शक्ति का
फिर जाम कभी न छलकेगा
न जिस्म हमारा बिखरेगा
घूंघरू न बंधेगी पावों मे
इज्जत न लगेगी दावों मे
हम पर किये सब जुल्मों का बदला भी चुकाना होगा
नाचूंगी कब तक .....

(93)

छोड़ के नादानी दिल, झूठे सपनों से निकल आ
नहीं है जिसकी मंजिल, कब तक तू उसमे चलेगा

अनायास दिल हमे छोड़कर
साथ उन्ही के उड़ जाता
आसमान मे महल बनाकर
सुंदर सा इक ख्वाब सजाता
पता नही इस दिल को, कैसे ये टूट के गिरेगा
नही है जिसकी .....

तश्वीर बनी उनके दिल मे
इससे पहले गर मिल पाते
शायद तनहाई के बदले
गीत खुशी के हम गाते
हकीकत ये न बनेगी ,ये तो सपना ही रहेगा
नही है जिसकी.....

उनका साथ नही मेरा ये
क्यों न समझ लेता दिल भी
एक राह के राही नही हम
आगे क्यों बढ़ता फिर भी
आगे तनहाई मिलेगी, तन्हा तू कैसे रहेगा
नही है जिसकी .....

(94)

वो सुहानी सी बेला कभी आयेगी
गुनगुनायेंगे हम, साथ होगी कोई

उठती है दिल मे तड़फ सी मगर
मै तन्हा हूं, कोई नही हमसफर
पास वो होगी, फिर प्यास न रह पायेगी
वो सुहानी सी .....

वो मूरत है जैसी, ख्वाबों मे बसी
नहीं पास है, पर वो होगी कहीं
साथ लेकर बहारों को वो आयेगी
वो सुहानी सी .....

रूक न सके, जब बुलाऊं उसे
मुझे जान ले, मै समझ लूं उसे
दिल मे अरमां लिये ,पास वो आयेगी
वो सुहानी सी .....

(95)

हमारी इच्छाशक्ति
इतनी तीव्र हो
कि सोते जागते
केवल उसी का ध्यान हो
जब तक
मिल नही जाती मंजिल
बेचैनी इतनी कि
परिश्रम करते करते
जी नही भरता
कि परिणाम तो
मिल कर रहेगा
जब कामना ऐसी है
जैसे पक्षियों ने की
उड़ने के लिये और
पंख उगा दिये प्रकृति ने
कि फूल मचल उठे
खुशबू के लिये
और फूल खुशबूदार हो गये
कामनाएं तो
उठती हैं गिरती हैं
समुद्र की लहरों की तरह
पर एक इच्छा ऐसी कि
पूरा करने के लिये
हाथ उठ जायें अनायास
परिश्रम के लिये
जैसे कोई पूजा करता है
हर घड़ी हर पल
अपने इष्ट को पाने के लिये
वैसे ही मचलता है दिल

जिस मंजिल को पाने के लिये
हाथ की लकीरों को
बदल जाना पड़ता है
कि हमारे भाग्य मे अगर
नही भी लिखी है तब भी
लिख देगी प्रकृति
हर बार हमारे हाथों मे
अगर इच्छाशक्ति हमारी
ऐसी हो कि
खींच लाये कहीं से भी
सद् भाग्य को इस धरा पर ।।

(95)

सपना एक ऐसा
जो खुली आंखों से देखा
हमारी धरती मे
हमारी मिट्टी मे
सुख शान्ति और समृद्धि का
वास होगा और सभी लोग
उत्साह से शान्ति से
जीयेंगे बिंदास होकर
ना होगा यहां कोई
रक्तपात आतंक भय
और अराजकता कभी
फिर सफल होगी मानवता
हमारी कामना पूरी होगी
यह कठिन रात्रि बीत जायेगी
फिर होगी नई सुबह
हृदय मे होगा नया जोश
कि हमारी ये भूमि
स्वर्ग से सुंदर होगी ।।

(96)

हमारा कार्य

हमारी मजबूरी नही

बल्कि वरदान है

पूजा है इबादत है

वह जीवन पर बोझ नही बल्कि

इंजिन है जरिया है जिससे

सांसे चलती हैं पूरे परिवार की

और स्वयं की भी

इसीलिए जो लोग

अपने काम मे लेते हैं विशेष रूचि

और लगे रहते हैं हमेशा उसे

बेहतर से बेहतर बनाने के लिये

उनको मिलती है भरपूर आत्मसंतुष्टि

और कभी कम नही होता उनका उत्साह

कार्य को पूरा करते करते

महसूस करते हैं वो असीम खुशी

ऐसे कर्मठ नागरिको पर

देश को भी नाज रहेगा हमेशा

फिर क्यों न हम भी शामिल होकर

कदम से कदम मिलायें

अपने देश की उन्नति के लिये

और सबके विकाश के लिये ।।

(97)

मेरी आंखें तरस गई पर तुम नही आये ।
भिगो दी इन्हें अश्कों ने मगर तुम नही आये ।।

पलभर न छोड़ने का वादा था मगर ।
तन्हा चले इतना सफर तुम नही आये ।।

आहट से बढ़ गई थी दिल की धड़कन।
तड़पता रहा दिल मगर तुम नही आये ।।

याद क्या अब तक न आई मेरी ।
तुम्हें हर वक्त बुलाया मगर तुम नही आये ।।

आज भी पलकें बिछायी हैं राह मे ।
ढल गई है शाम मगर तुम नही आये ।।

मुहब्बत भरी शरारत मुझे याद है मगर।
किस्मत को लग गई नजर तुम नही आये ।।

मेरी आंखे तरस गई पर तुम नही आये ।
भिगो दी इन्हें अश्कों ने मगर तुम नही आये ।।

(98)

इक नजर प्यार से ऐसे तू देख ले मुझको
जान ले दिल पे मेरे ठोकर जो लगी तुमसे
ये नजर प्यार की फिर से न मिलेगी तुमको

फिर से मिलने का कभी मौका न मिलेगा शायद
मेरा चेहरा भी कभी फिर से न खिलेगा शायद
तुमसे मिलने की ये घड़ी भी कितनी छोटी थी
ये घड़ी भी कभी फिर से न मिलेगी शायद
एक नजर प्यार से .....

बांधना चाहता था जिसको न बंधेगा शायद
ये चुभन दर्द की अब से न मिटेगी शायद
याद आयेगी कभी मेरी तो याद कर लेना
ऐसी चाहत भी कहीं जग मे न मिलेगी शायद
ये नजर प्यार से .....

(99)

कब्र बनी है उधर की दुनिया
बता मै कैसे तुम्हें सजाऊं
चीख रहीं हैं करूण पुकारें
मै तुमको क्या गीत सुनाऊं
अपनों के ही जान के दुश्मन
बने हुये क्यों लोग
किसे पता है कल का सूरज
देख सकेगा कौन
रक्त बह रहा उधर किसी का
कैसे तेरा जी बहलाऊं ।। चीख रहीं
कैसे रह लेते हैं वे
अंतरतम को अपने दबाकर
कैसे भटक गये हैं किनके
बहकावे मे आकर
दिल मे कैसा भरा दर्द है
मै कैसे तश्वीर बनाऊं
चीख रहीं हैं.....

आज मुझे तू रूकने को
मजबूर न कर
जिन्हें जरूरत है उनसे
मुझे दूर न कर
उधर तड़पते कितने घायल
नजर से मै कैसे बंध जाऊं
चीख रहीं हैं .....

(100)

भारत माता ये हमारा गान है
हर हिन्दुस्तानी तेरी संतान है
ये बात तो हर एक को स्वीकार है
बंध सकें एक दूसरे से भावना मे
मंदिर और मस्जिद बनायी जाती है
भले पुकारें नाम से भगवान खुदा
धरम प्रेम है उनमे सिखायी जाती है
पर देख हालात आज हम हैरान है ।।हर हिन्दुस्तानी ....

चूप मत हो देख अपने बच्चों को
ये बात समझा मां तुझको मानेंगे
पूछ इनसे ये लड़ेंगे भाई भाई
या तेरी सलामती को चाहेंगे
अंजाम को क्यों जानकर अनजान हैं।। हर हिन्दुस्तानी.....

कौन ऐसा धर्म है जो ये सिखाता
आदमी दुश्मन हो अपने भाई का
शांति के तो वास्ते हैं धर्म सब
आधार बना रहे हैं क्यों लड़ाई का
दीपक कहां है जिसकी ज्योति ज्ञान है ।। हर हिन्दुस्तानी .....

(101)

दर्पण को देख कर जनाब उसको न तोड़िये
चेहरे पे लगी कालिख मिटाकर तो देखिये
ऊंचाईयां मिलती है मेहनत से ही यहां पर
महल खड़ा होता है इंसानियत की नींव पर
हैवानियत पर भ्रम को मिटाकर तो देखिये।। दर्पण को देख...
कानों से ही सुनते हैं कि बंसी ये कैसे बजती
पानी मे घुली शक्कर आंखों से नही दिखती
खुदा को दिल मे बिठाकर तो देखिये ।। दर्पण को देख .....
फूल है जो पास मे खुशबू लिया होता
विश्वास ही मौजूदगी का काफी नही होता
प्रेम खुदा पर भी जगाकर तो देखिये ।। दर्पण को देख.....

(102)

अपनी बाते कह दी तुमने
पर तुमसे मै कह न सकी
बंधी हुई हूं मै तो ऐसे
कहती भी तो क्या कहती
तुमको भी ये होगी शिकायत
कटकर तुमसे मै रहती हूं
इतने करीबी मे हो फिर भी
ये दूरी बनाये रखती हूं
ये धागे पर कैसे कटेंगे
जो राह चुनी वो हमने चुनी ।। अपनी बातें कह...

नही छुपा पायी हूं शायद
गुजर रही क्या दिल मे
तेरा भ्रम तो सच ही था
पर झूठ बनाया है मैने
तुमको बताऊं या न बताऊँ
दोनो से बात नही बनती ।। अपनी बातें कह .....

इक बंधन ने दिल को बांधा
इक बंधन से पांव बधें हैं
मै तो तड़फ कर सह लूंगी पर
तेरा तड़पना कैसे सहूं मै
आकर तुम भी चले गये पर
मन की बातें मन मे रही ।। अपनी बातें कह .....

(103)

“देखो मत ऐसे तुम मुझको
तुमसे न मोहब्बत कर बैठूं"
“लहरा के चलो मत जुल्फों को
कहीं दिल तुमसे न लगा बैठूं "

“नजदीक से जब तू गुजरता है
तो धड़क उठता है जिया मेरा
ये सोच के डर लग जाता है
कि ये क्या हाल हुआ मेरा
पास मे तुम आया न करो
कहीं सर अपना न झुका बैठूं"
“लहरा के चलो मत....."
“देखो मत ऐसे ....."

“तुमको न इशारा कर बैठूं
तिरछी न करो तुम नजरों को
बस इतना उपकार करो अब
होश मे रहने दो मुझको
पास मे तुम आया न करो
कहीं तुमको गले न लगा बैठूं "
“देखो मत ऐसे....."
“लहरा के चलो मत....."

(104)

है ये नाजुक सा मुखड़ा वो चंदा मेरी
आ छुपा लूं लगे न किसी की नजर

नई दुनिया मे अब पड़ चुके हैं कदम
ये सपना नही आज सच है सनम
जिन्दगी अपनी रंगीन अब हो गई
खाली तश्वीर मे अब तू रंग बन गई
साथ मिलकर चलेंगे अब अगला सफर।। आ छुपा लूं.....

जो सज गई मेरी किस्मत है तू
प्रतीक्षा थी जिसकी वो सावन है तू
हसीं मुखड़ा छुपाये हो फिर किस लिये
ऐसे शरमा रही दिल मे धड़कन लिये
अब भी सिमटी हुई जाने क्यों इस कदर।। आ छुपा लूं ....

है सागर की लहरों सी हलचल यहां
छोड़कर अपनी पतवार आये हैं हम
गर्म आंधी अब तक जो भीतर मे थी
उसकी कंपन अब होठों पे आने लगी
अब भी झुकी क्यों है तेरी नजर ।। आ छुपा लूं ....

(105)

भूलकर बीती बातें गले लगा अब जिन्दगी
चमक उठेंगी आंखें तेरी खुशी यहीं बस जायेगी

दस्तक देती खुशी तेरी द्वार दिल के खोल दे
भूल जा उस बेवफा को आ खुशी तू बोल दे
देख लेना याद उसकी फिर कभी न आयेगी
चमक उठेंगी आंखें .....

ऐसे रोकर बिता देना तो कोई जीवन नहीं
न लगी ठोकर जिसे हो बता यहां तू है कहीं
चाहकर देखो हंसी तेरी तुझे मिल जायेगी
चमक उठेंगी आंखें .....

है संभलना अब तुझे ही मान तू कायर नहीं
तू सजा ले फिर सजेगी जिन्दगी तेरी यहीं
रूठी हुई बहारें फिर पास मे तेरे आयेंगी
चमक उठेंगी आंखें .....

(106)

मुझे प्यार तुमने किया था कभी
मुझे ही तू सजनी पुकारा कभी
क्या हो गया देखते देखते

भूले क्यों जो तुमने सपने दिखाये
वादे तुम्हें क्या नहीं याद आये
मजबूरी तेरी बता कौन सी थी
तुम न पहचानते अब ये चुनरी अंगूठी
तेरे प्यार की है निशानी सभी
मुझे प्यार तुमने.....

तुम भूल गये दिन वो जब तू मिला था
क्या जानकर दिल मुझे तू दिया था
बता खुश है क्या तू खुशी छीनकर
पर कैसे रहूं मै तुझे भूलकर
तुमसे अलग तो न सोचा कभी
मुझे प्यार तुमने .....

तुम मुझसे नजरें मिलाते नही हो
क्या बात है क्यों बताते नही हो
तेरे लिए प्यार व्यापार है क्या
अगर बात ये थी तो क्यों न बताया
क्यों आती मै तुमसे मिलने कभी
मुझे प्यार तुमने .....

(107)

किसी देश की
और उसकी संस्कृति की
उत्थान और पतन मे
यूं तो सभी नागरिकों का
बराबर योगदान हैं
चाहे वह नारी हो या पुरूष
परन्तु थोड़ा गहराई मे जायें
तो नारी की भूमिका
हमेशा ही विशेष है
हर देश मे
हर काल मे
क्योकि नारी
किसी देश की संस्कृति की
महत्वपूर्ण वाहिका है
उसके नैतिक पतन से
राष्ट्र का विनाश होता है
जिस देश मे नारी को
उचित सम्मान प्राप्त होगा
उस राष्ट्र मे अवश्य ही
सुख शांति का
वास होगा
क्योकि परिवार को
एक सूत्र मे बांधे रखने मे
शांति बनाये रखने मे
नारी का विशेष योगदान
पर कोई संदेह नही हो सकता
पर युवा पीढ़ी को
चरित्रवान बनाये रखने मे
उन्हें कर्तव्य पथ मे

आगे बढ़ने के लिये
प्रेरित करने मे भी
नारी की भूमिका काफी महत्वपूर्ण है
लेकिन यदि वह स्वयं ही
कर्तव्य पथ से विचलित होगी
या खुद ही अपने दैहिक आकर्षण
के चक्रव्यूह मे फंसी रहेगी
दैहिक पवित्रता का पालन
नही करेगी तो
कैसे वह एक चरित्रवान पीढ़ी को
जन्म देगी या संस्कार देगी
कैसे वह अपने पुत्र को
समझा पायेगी कि वह
नारी का सम्मान करे
जो सम्मान पुरूष को
पहले से ही प्राप्त है
वह सब एक साथी के रूप मे
एक पत्नि के रूप मे
कैसे हासिल कर सकेगी
और
जब परिवार मे
समाज मे देश मे
लोग एक दूजे का
सम्मान नही करेंगे
तो परिवार समाज और देश मे
शांति कैसे कायम हो पायेगी
सुख और समृद्धि का राज
कैसे स्थापित हो पायेगा
क्योकि ये एक ऐसी कविता है
जो सदा ही नारी के आंचल मे

लिखी जाती है
इसीलिये नारी के आंचल को
पवित्र बनाये रखने की
जिम्मेदारी
पुरूष और नारी
दोनो की बराबर बराबर है ।।

(108)

हमारी धरती
पेड़ पौधों से भरी
जीव जन्तु से भरी
प्रेम स्नेह आनंद से भरी
हरी भरी धरती हमारी
करूणा दया ममता
की प्रतिमूर्ति
नदिया झरने भी सिखा रहे
हम मनुष्यों को परोपकार की शिक्षा
सपने देखें इस तरह
कि पूरे हों सबकी आकांक्षाएं
न रहें किसी की आंखों मे आंसू
न प्रकृति की, न जन्तुओं की
न पेड़ पौधों की , न किसी इंसान की
अगर आंसू आने ही है आंखों मे
तो खुशी के हों, दुःख के नहीं
अंधेरी रात के बाद
सुहानी सी सुबह
जिसकी प्रतीक्षा मे
सूख गये आंसू
सूनी निगाहें इंतजार करती हैं
सद् बुद्धि ,सद् विचार और
मानव की विवेक दृष्टि की
जो बचा सकती है
महा विनाश को
जो बढ़ रहा कदम दर कदम
धरती की ओर
प्रलय की तारीख
क्या पास आती जा रही है

क्या आने वाली पीढ़ी के हाथों मे
हम स्वर्णिम भविष्य दे पायेंगे
या उन्हें हम अंधकार और
काली रातें ही दे जायेंगे
क्या उजाले का अधिकार
हम छीन लेंगे उनके हाथों से
वो सुहानी सुबह ,वो चांदनी रातों के
उम्मीद अभी खत्म नही हुई है
मगर हम
क्या विनाश को विकास की
अंतिम मंजिल के रूप मे
महसूस कर पा रहे हैं
देख पा रहे हैं कि
हम गलत रास्ते पर हैं
हम नैतिक रूप से
आध्यात्मिक रूप से
पिछड़ रहे हैं
आत्मिक उन्नति के लिये
क्या कर रहे हैं हम
क्या नैतिकता सिर्फ किताबी बातें बनकर
रह जायेगी सिर्फ किताबों मे
विकास और आध्यात्मिक उन्नति
संग संग चल सकते हैं
एक दूसरे का पर्याय बनकर
तभी तो आयेगी क्रांति
मनुष्य के जीवन मे
मगर क्रांति ऐसी जो
उजाला लाती है
कि हम देख सकेंगे
अपने अस्तित्व को

और उस महाअस्तित्व को भी
जिसके अंश हैं हम
क्रांति जो रक्त नहीं मांगती
अगर बलि चढ़ानी ही है
तो अपने दुर्गुणों की चढ़ानी है
जो एक पर्दा बन गई है
लोहे और पारस के बीच
जो पास ही है मगर
छू नही सकते
कि लोहा जो बन सकता था सोना
मगर लोहा ही रह गया
जो कृपा, ममता बरस कर
भिगो सकती है
परमसत्ता के आशीर्वाद से
मनुष्य पर पौधों पर जीवों पर
पर ये कैसी क्रांति है
जो रक्त मांगती है
मानव को मारकर
क्या हम मानव का भला कर रहे हैं
ये कैसी विचारधारा है
जो हिंसा का समर्थन करती है
जो बलि देती है मनुष्य की
किन्तु दावा करती है कि
ये रक्तपात है भलाई के लिए
मनुष्यता की उन्नति के लिये
क्या ऐसा कहते हुये
आपका विवेक साथ दे रहा है
क्या आपकी आत्मा साथ दे रही है
ये छल आखिर किसके लिये
इस धरती के लिये

जिसे रंगा जा रहा है मानव रक्त से
किन्तु ये धरती खून की प्यासी नही है
इसे तो प्यास है आपके
स्नेह की
ये ममतामयी मां
पालन करती है सबका
तो भी आशा है इसे
कुछ आपसे भी
कुछ नही तो अपने लिये ही सही
वातावरण को शुद्ध रखिये
जल ,मिट्टी ,वायु को प्रदूषण से
मुक्त करने के प्रयासों मे योगदान दीजिये
फिर तो प्रकृति का आंचल
सदा है आपकी रक्षा के लिये ।।

(109)

मेरे पापा का विश्वास मुझ पर
जिसका मेरे भीतर के
आत्म विश्वास पर
है कितना बढ़ा योगदान
मेरे अंदर की खुशी का
एक महत्वपूर्ण कारण
ये खुशी, ये आत्मविश्वास
जीवन भर मेरे साथ रहेगा
मै जानती हूं अच्छी तरह से
कि आपके विश्वास पर कभी
आंच नही आयेगी
मेरे कदम डगमगायें कभी
वो दिन कभी नही आयेगा
क्योकि मेरे पास है सहारा
आपके विश्वास का
कि मै
अपने सिद्धांतों के विरुद्ध
कभी समझौता नही करूंगी

(110)

मेरी मां
तुमने अपना बचपन देखा
मेरे बचपन मे
आज मेरे इस उम्र मे भी
तुम्हें दिखाई देता है
अपना जीवन
तुम दुबारा जी रही हो
मेरे भीतर
महसूस करती हो
अपनी उमंगें
तुमने सिखाया मुझे
बचपन से अब तक
फिर भी वादा चाहती हूं
कि हमेशा
रहेगा मेरे ऊपर
तुम्हारा ये स्नेह भरा हाथ
जीवन संघर्ष मे
रहेगा मेरे सामने
तुम्हारा आदर्श
तुम्हारा जीवन
एक मार्गदर्शक बनकर
मगर फिर भी
सामने आने वाली चुनौतियों को
साहस के साथ
स्वीकार करने की
मेरे अंदर विकसित हो रही
क्षमता के
पूर्ण विकास मे
चाहिये

तुम्हारा सक्रिय योगदान
कि जीवन के प्रत्येक चरण को
जी सकूं
खुश होकर
कि मैने कर्तव्य
निभाया है सफलतापूर्वक।।

(111)

जरा धीर धरो मेरे दिल
है पास मे वो महफिल
हर पल तू जिसे चाहा
मिल जायेगी वो मंजिल

ऊंची पहाड़ की वो चोटी
जिसके उपर जाना है तुझे
जिसमे चलकर पहुंचेगा वहां तू
उस राह को भी पाना है तुझे
कभी दूर थी वो तुझसे
अब तो वो नहीं मुश्किल।।
हर पल तू .....

तेरे भीतर की छुपी शक्ति ने
हर बाधा को पार किया
वो साथ मे आयेगी मेरे
जिसका अब तक इंतजार किया
तू झूम उठेगा दिल
अब दूर नही वो दिन ।।
हर पल तू .....

(112)

पेड़ हूं मै
मत काटो मुझे
मै मित्र हूं तुम्हारा ।।

जिन्दगी पाते हो तुम
जिस हवा को सांसों मे लेकर
मै साफ करता हूं तुम्हारे लिये
फल देता हूं तुम्हारे लिये ।।

बरसात मे भीग कर
खेलते हो तुम
खेत जो लहलहाते हैं
उसी बदली को खींचता हूं मै
तुम्हारे लिये अपने लिये ।।

दवा भी हूं तुम्हारा
मै साथी भी हूं तुम्हारा
साथ मुझे दे दो
मेरे बीज तुम लगा दो
मै काम आऊंगा फिर से ।।

पेड़ हूं मै
मत काटो मुझे
मै मित्र हूं तुम्हारा ।।

(113)

आशा बंधी हुई है
हमसे इन फूल जैसे
बच्चों की
जिनके मासूम चेहरे पर
लिखी है
तकदीर देश की ।।
कुछ सीखना है
इनसे हमको
कुछ सिखाना भी है
स्नेह से सींचना है
इस तरह
कि न पनपे
ईर्ष्या और द्वेष की खरपतवार
बल्कि
प्रेम और सहयोग की
भावना लहलहाये
और कर्मठ हो
बच्चे मेरे देश के ।।

जिस राह को
चुना है हमने
अपने लिये
बंध जाते हैं
हम उस रास्ते से
क्योकि रास्ता
बांध लेता है हमें
अपने साथ
जगत के न्याय मे
हो सकता है कि

कोई कमी रह जाये
किन्तु
ईश्वर का न्याय
कभी पक्षपात नही करता
अपने अंतरतम का
यही विश्वास
हमे प्रेरणा देता है
कि हमारे हाथों से
वो काम हो जाये
कि सभी के चेहरे पर
वो मुस्कान आ जाये
कि बच्चे और हम
हमेशा चलें सही राह पर
कि भविष्य सुनहरा हो जाये
क्योकि
आशा बंधी हुई है
हमसे इन फूल जैसे
बच्चों की
जिनके मासूम चेहरे पर
लिखी है
तकदीर देश की

(114)

जीवन साथी के
संग की मधुर कल्पना
किसने नहीं की होगी
सगाई होते ही
खुशी से दिल झूम उठा होगा
फिर विवाह की कल्पना मे
एक एक पल कैसे बीता?
उसकी यादों मे खोये हुए
मन को कितना समझाया होगा।।

फिर आज जब उनके साथ
पास पास रहकर जीने का
मौका मिला है तो
संबंध इतने तनाव भरे क्यों है?
चार दिन की ये जिन्दगी
प्यार से बिताने को मिली है
फिर अपने प्रियतम से
अपनी प्रियतमा से
इतनी दूरी क्यों ?
फिर से अब
पहल करने मे
झिझक कैसी ?
जीवनसाथी से अब
फिर से प्यार भरे दिनों की
शुरुआत करने मे
थोड़ा झुक जाने मे
किसी गलती को माफ करने मे
देरी क्यो?
पलभर की जुदाई

सहन नही हो रही थी कभी
फिर आज क्यों है
इतनी नाराजगी
क्यों नहीं आज फिर से
एक दूसरे के सीने मे
सर रखकर रो लेते
आंसुओं मे बह जाते
सारे गिले शिकवे और
एक दूसरे की बाहों मे
जैसे स्वर्ग मिल जाता ।।

(115)

हमें छोड़कर आप जो जा रहे हैं ।
हमें दिल से यूं ना भुला दीजियेगा ।।

सपने जो देखो तो पूरा भी करना ।
आप सपनों मे हरदम न खो जाईयेगा ।।

फूलों के साये जो सब चाहते हैं ।
आप संघर्ष उसके लिये कीजियेगा ।।

चांदनी रातें नही होती है हरदम ।
अंधेरी रातों मे दीपक जला लीजियेगा ।।

हमे छोड़कर आप जो जा रहे हैं ।
हमे दिल से यूं ना भुला दीजियेगा ।।

(116)

छोड़ के नादानी दिल झूठे सपनो से निकल आ
नहीं है जिसकी मंजिल कब तक तू उसमे चलेगा
अनायास दिल हमे छोड़कर
साथ उन्हीं के उड़ जाता
आसमान मे महल बनाकर
सुंदर सा इस महल सजाता
पता नहीं इस दिल को , कैसे ये टूट के गिरेगा
नहीं है जिसकी मंजिल.....
तश्वीर बनी उनके दिल मे
उससे पहले गर मिल पाते
शायद तनहाई के बदले
गीत खुशी के हम गाते
हकीकत ये न बनेगी ,अब तो सपना ही रहेगा
नही है जिसकी मंजिल.....
उनका साथ नहीं मेरा ये
क्यों न समझ लेता दिल भी
एक राह के राही नहीं हम
आगे क्यों बढ़ता फिर भी
आगे तनहाई मिलेगी , तनहा तू कैसे रहेगा
नही है जिसकी मंजिल.....

(117)

उलझन थी दिल मे जब हम मिले तो
तूफान दिल के मुखड़े पे आये
यही चाहते हैं मुहब्बत से अपनी
कि मुस्कायें संग हम वो दिन लाये

मुलाकात हो गई , तनहाई न थी
मगर प्यासे दिल को मुहब्बत मिली है
अब तो मेरा प्यार किया तुने स्वीकार
इसमे तो दुविधा थी, वो मिट गई है
यही प्यार हमको मिलायेगा तुमसे
अभी जैसे इसने हमे पास लाये
यही चाहते हैं.....

भले ही हमारी, खामोशी न टूटी
कर ली मगर बात नजरों ने मिलकर
नही भूल सकेगी ,मेरे साथ तू भी
जो धड़का था दिल भी तेरे साथ मिलकर
इक दूजे की जो बातें थी दिल मे
नहीं कह सके वो दिल ने बताये
यही चाहते हैं .....

विदाई की नजरें ,भरी आंसुओं से
वो तश्वीर दिल मे मेरे बन चुकी है
कहीं भूल न जाऊं ,कहां मै खड़ा हूं
होश के रहते नजरें हटानी पड़ी हैं
गुजरा समय फिर नही लौटता है
मगर ये तमन्ना है फिर लौट आये
यही चाहते हैं .....

(118)

लोग कहते हैं कि
प्रशंसा हमारे कानों मे
अमृत की तरह
लगती है मगर कभी
ये प्रशंसा हमें
सुनने को नहीं मिली
शायद कोई हमारी प्रशंसा
हमारे मरने के बाद करे
पर सुनने के लिए
तब हम न होंगे
जाने क्यों लोग किसी की प्रशंसा
उसके मरने के बाद ही करते हैं
तो ऐसा विचार आया मन मे कि
जब हर व्यक्ति मे प्रशंसा के लायक
कुछ न कुछ मौजूद ही होता है
हम उसे ढूढ़ते क्यों नही
उसके जीते जी
क्यों न हम ये बात अपनी आदत मे
शामिल कर लें कि
हर दिन कम से कम
तीन लोगों की प्रशंसा करेंगे
खुले दिल से
पर ध्यान रहे कि
प्रशंसा और चापलूसी मे
अंतर होता है
जमीन आसमान का
सच्ची प्रशंसा करने से
हम किसी की खुशी का कारण
बन जायेंगे और फिर

हमारी जुबान भी सुधर जायेगी
फिर हमारी नजर हर किसी मे
अच्छाई ढूढ़ेगी तो हमारे लिये भी
ये दुनियां बहुत खूबसूरत
हो जायेगी क्योंकि
हमे सकारात्मक सोचने की
आदत हो जायेगी हमेशा के लिये ।।

(119)

देखूं मै तुम्हारा मुखड़ा
मुस्कुराता हुआ ।।

तुम्हे देखकर मै
भुला दूं गमों को
दुनिया की सारी
परेशानियों को और
उन्ही की तीरों से
जो जख्म पाये
मिट जाते हैं वो
तेरी नरमी से
तेरे स्पर्श से
मरहम की तरह
सोने मे सुहागा
जो मै देखूं तुम्हारा मुखड़ा
मुस्कुराता हुआ।।

मेरे ख्यालों मे
अनायास ही
तेरा चले आना
तो जैसे मौसम का
बसंत हो जाना
कहीं भी कभी भी
चाहे मै जहा भी रहूं
फूलों की सुगंध
का अहसास हो तुम
मेरे जीवन मे
रहना ऐसे ही हमेशा
कि देखूं मै तुम्हारा मुखड़ा

मुस्कुराता हुआ।।

(120)

हमने अब तक

जो पाया है

वह ज्यादा महत्व का है?

या वह जो खो दिया है?

उत्तर तो यही मिलेगा

कि जो नही मिल सका

उसकी प्यास अभी बाकी है

लेकिन जो मिल गया

उसे लगभग भुला दिया

और कभी उसके लिये

ईश्वर को धन्यवाद नही दिया

अपने आसपास तो नजर दौड़ाईये

ईश्वर की कृपा के

कितने उदाहरण मिल जायेंगे

मस्तक श्रद्धा से झुक जायेगा

ईश्वर के सामने

मन को मिलेगी शांति

फिर जो लक्ष्य है भविष्य का

वह पूरा होगा निश्चित ही

क्योकि स्थिर मन से

उच्च अभिलाषा से

पावन उद्देश्य से

किया गया हर कार्य

सफल होगा

क्योकि प्रकृति भी बाध्य है

ऐसे हर कार्य मे

सकारात्मक सहयोग के लिये ।।

(121)

स्वच्छंद पक्षियों को आकाश मे
देख यूं कल्पना सी उठी मन मे

मेरी भी अगर होती पांखें
न बेचैन होती न तरसती आंखें
आसमां मे उड़ पहुंचता उनके पास
होठ मुस्काते पाकर उन्हें पास
उन्हें देख और क्या देखता मै
स्वच्छंद पक्षियों को .....
कल्पनाकाश मे यूं तो उड़ता रहा
सूने दिल मे मै संगीत भरता रहा
पंख बनकर यादें उनकी आयी
अंधेरे मे जैसे रोशनी छायी
काश! इतना मनोरम हो सत्य मे
स्वच्छंद पक्षियों को .....

फिर यूं लगता मेरी पांखें न सही
याद करता गगन देख उनकी बातें कही
ये आशा है वो भी उसे देख के
बातें करती हों मुझसे मुझे याद करके
मिलते इस तरह रोज नीरव मे
स्वच्छंद पक्षियों को .....

(122)

सो जा
सो जा मुन्ना राजा
आजा निदियां आ जा

मेरा लाला निदियां मे
पहुंचोगे ऐसी दुनियां मे
पंख लगेंगे हाथ मे तेरे
उड़ना तुम आकाश मे
चांद सितारे बातें करेंगे
तुम जल्दी से जा
सो जा
सो जा मुन्ना .....

परियां रहती हैं वहां
बादल उड़ते है जहा
उनके संग मे खेलना
फिर गोदी मे बैठना
चल नन्हे पैरों से उन्हें
अपनी चाल दिखा जा
सो जा
सो जा मुन्ना.....

(123)

स्वयं की नजर मे
खुद का आकलन
फिर
स्वयं से ही प्रतियोगिता
खुद की क्षमता बढ़ाने की
हर संभव कोशिश और
कभी न हार मानने की जिद
उन्नति की गहरी अभिलाषा
हमारे भाग्य पर जीत को
सुनिश्चित करती है
फिर हमारा पीछे रह जाना
तो जैसे हमने ही चुना होगा
इसके बावजूद अब भी
हमारे पास है समय
और भविष्य भी है
बहुत कुछ खोने के बाद भी
बहुत कुछ बाकी है
पाने के लिये
हमारे गंभीर प्रयासों के लिये
खुद के आकलन के लिये
स्वयं की नजर मे
उपर उठने के लिये ।।

(124)

सागर की तरह गहराई
सागर जैसा रहस्यपूर्ण
यह जीवन समुद्र
उठती लहरों की तरह
असंख्य इच्छायें
इनमे से कुछ हमारे
जीवन से ऐसी जुड़ी
कि जीने की वजह बन गई
यही तीव्र इच्छायें
शक्ति का कारण बनती है
इसीलिए हमारी कामनाओं को
पवित्र होना होगा
जिससे शक्ति का
प्रयोग हमेशा
सबके हित मे हो
सही रास्ते से मिली सफलता
मन को आनंद विभोर करती है
सागर के भीतर का
हमारे अंतस का मोती
यही आनंद हमेशा
हमे सही कार्य करने के लिये
प्रेरित करता है
और हम ईश्वर की
श्रेष्ठतम रचना होने की
अपनी जिम्मेदारी को
निभाने के काबिल बनते हैं।।

(125)

ये रात अब क्या गाने लगी
क्यों दिल मे हलचल मचाने लगी

वो कहानी भले ही अधूरी थी
मगर कब की खतम हो चुकी थी
ये रात क्यों फिर सुनाने लगी
क्यों दिल मे .....

साथ मिलना था जिनका हमें
ये गम ही मिला उनका हमें
आज फिर याद उनकी सताने लगी
क्यों दिल मे.....

आज क्यों रात ढलती नहीं है
बेचैनी दिल से टलती नहीं है
बुझी राख फिर से सताने लगी
क्यों दिल मे .....
===***===

(126)

इस रंग बदलती दुनियां मे
अपने कदमों को बढ़ाने दो
पर जीवन को जीने के लायक
बनना है उसे बन जाने दो

शिक्षा प्रकाश के मौसम मे
अब ज्ञान की ज्योति जलानी है
उस ज्ञान को पाने के खातिर
पढ़ने की ललक जगानी है
अब लक्ष्य हमारे आगे है
बाधा को हमे हटाने दो
इस रंग बिरंगी .....

भावुकता और रूमानी की
फिसलन से भरी ये दुनिया है
गिरने से स्वयं भी बचना है
साथी को अभी बचाना है
कुछ बन के दिखाना है हमको
ये लक्ष्य हमें पा जाने दो
इस रंग बिरंगी .....

(127)

हुई दोस्ती हुई दोस्ती
कछुए और खरगोश की
दौड़ लगाई दोनो ने
कछुआ चलता धीरे धीरे
खरगोश दौड़ता तेजी से
रास्ते मे खरगोश सो गया
उठा तो भागा तेजी से
पहुंच गया था कछुआ पहले
जीत गया था कछुआ पहले
इसीलिए तो कहते हैं कि
कभी न छोड़ो मेहनत करना
आगे आगे बढ़ते रहना ।।
(पारंपरिक कहानी पर आधारित)

(128)

“खिलती मुस्काती वो मेरी महबूबा होगी
फूलो सी नाजुक वो चंचल दिलरूबा होगी "
“डोली सजेगी मेरी मेरा वो साजन होगा
प्यार की खुशबू से महकता आंगन होगा"

“उनकी जुल्फों को फूलों से सजाऊंगा
झूले मे बिठाकर मै झूला झूलाऊंगा
मेरे गले मे उनकी बाहों की माला होगी "

“बगिया मे बैठकर हम सपने सजायेंगे
सपनों की दुनिया मे हम दोनो खो जायेंगे
उस दूनिया का इस दुनिया मे आवन होगा "

“अपना इक छोटा सा प्यारा संसार होगा
होगी जगह ऐसी जहां पे केवल प्यार होगा
खुश रहेगी मुझसे वह न खफा होगी"

“वो रहेगा पास फिर सावन न तड़पायेगा
बिजली जब चमकेगी मुझे सीने मे छुपा लेगा
प्यार की छाया मे मौसम मनभावन होगा"

(129)

हो मुबारक मुबारक दिन ये
और ये दिन कई बार आये
ऐसे मिलते रहेंगे सदा हम
हां ,ऐसे ही तू मुस्कुराये

बाग मे तेरे जीवन के
फूल खुशियों की हरदम खिले
तय हो सफलता की राहें
वो साहस भी तुमको मिले
हो मुबारक .....

पहुंचना हो जहां भी तुम्हें
कभी पीछे कदम न हटे
मेरे दोस्त तुम बढ़ते रहना
सामने चाहे मुश्किल बड़े
हो मुबारक.....

तेरी लम्बी हो इतनी उमर
हर खुशी हो तेरी हमसफर
नाम रोशन हो तेरा जहां मे
ऐसी मंजिल पे पहुंचे कदम
हो मुबारक .....

(130)

अपने घर लाऊंगा तुझे
दुनिया की सुध खो बैठोगी
इतना प्यार करूंगा तुझे
हम दोनो अब एक दूजे को
देख रहे चोरी चोरी
बांध लिया अनजाने मे ही
प्रीत की ये कैसी डोरी
दिल जो कहता सुन ले उसको
पास ही तुम पाओगी मुझे।। दुनिया की सुध.....

पूजा का मतलब समझा जब
सूने दिल मे तुम आईं
शब्दों मे बतलाऊं कैसे
मेरे प्यार की गहराई
मन मंदिर मे तुम ही बसी हो
आना दिखलाऊंगा तुझे ।। दुनिया की सुध.....

घूंघट के भीतर तू होगी
घर मे बजेगी शहनाई
सभी कहेंगे देख के तुझको
इस चंदा घर मे आई
मेंहदी रचे तेरे हाथों मे
मै ही नजर आऊंगा तुझे। दुनिया की सुध.....

(131)

मेरे सपनो का साथी तो आयेगा कोई
कभी दिल मेरा भी चुरायेगा कोई
मै भी उसके दिल मे छा जाऊंगी

यौवन का मुझको अहसास हुआ है
इन्द्रधनुषी सपनों का अंबार मिला है
बनाकर मुझे दुल्हनिया ले जायेगा कोई
मेरे सपनो का साथी .....

ये दिल मेरा जिस दिन जायेगा
हर अंग मेरा तब खिल जायेगा
देखेगा तो देखता रह जायेगा कोई
मेरे सपनो का साथी .....

यूं लाज से मै सिमट जाऊंगी
प्यार के रंग मे मै भी रंग जाऊंगी
पकड़कर हाथ मेरा बिठायेगा कोई
मेरे सपनो का साथी .....

(132)

हमे भी तुमसे बहुत
प्यार है ऐ जिन्दगी ।

ये दुनिया जो
खूबसूरत है कहीं
इसीलिए तो
हमें इसका वह रूप भी
प्यारा है जो
कम सुंदर है
क्योकि
हमें तुम्हारे हर रूप से बहुत
प्यार है ऐ जिन्दगी ।

मानव और उसके
गुण जो मानवीय है
उसके कारण किसी भी
इंसान का दिल
इतना बड़ा हो जाता है
कि आदमी के साथ साथ
पूरी की पूरी प्रकृति
उसके हृदय मै समा जाये
चाहे वह सजीव हो या निर्जीव
जैसे नदी पहाड़ सागर
आखिर हमे तुमसे बहुत
प्यार है ऐ जिन्दगी ।

जीने की इतनी
तीव्र इच्छा भी तो
शायद इसीलिए है
क्योकि स्वर्ग यहीं है

इसी दुनिया मे है
कहीं और जो स्वर्ग की
कल्पना है वह पता नहीं
कहां है और है भी कि नहीं
यह जानते हुये भी कि
मृत्यु एक सच्चाई है
फिर भी हमे तुमसे बहुत
प्यार है ऐ जिन्दगी ।।

(133)

बहुत खूबसूरत है
ये जिन्दगानी
हकीकत भी है
ये सुंदर कहानी

जीने की ललक
जो हमेशा रहेगी
खुशी की तमन्ना
भी हमसे कहेगी
दो चार दिन की
भली जिन्दगानी
हकीकत भी है.....
खट्टी भी है और
मीठी बहुत है
संघर्ष के साथ
खुशियां बहुत है
है कर्म की और
भाग्य की है कहानी
हकीकत भी है .....
कभी अपनों की दुआ
और जलन दूसरों की
फूलों के साये और
चुभन कंटकों की
मगर प्यार से
हमे सबसे निभानी
हकीकत भी है .....

(134)

मेरे भगवान मेरे ईश्वर
मेरी प्रार्थना सुन लो

मेरे बच्चों को सदा ही
इक भली जिन्दगी देना
अपने साये मे सुरक्षित रखना
अपना विश्वास उन्हैं देना

मेरे बच्चों के जीवन मे
शान्ति सदा बनी रहे
कभी संघर्ष भी आये तो
वे तेरा विश्वास ना छोड़ें

उनकी खुशी उनकी मुस्कान पर
कभी कोई ग्रहण ना लगे
अगर कुछ भी हासिल है
मेरे जीवन की तपस्या से
मेरे भगवान मेरे .....

(135)

कन्या को भी
जन्म लेने दो
माता के गर्भ मे
उसकी हत्या मत करो
बिटिया को भी
जन्म लेने दो
दुनिया मे
जीने का अधिकार
नैसर्गिक है
उसके हक को
छीनकर प्रकृति विरूद्ध
काम न करो
दूनिया मे जो रौनक है
उसमे उनका भी
योगदान है
कन्या को जन्म देकर
अच्छे माता पिता
की तरह
उसका भी परवरिश करो
वह कभी आपको
निराश नही करेगी
क्योकि
कन्या प्रकृति का
अनमोल उपहार है ।।

(136)

नारी तू सृजन की देवी है

तुमसे ही ये चमन खिला

अपनी इस प्यारी धरती को

ऐसा अनुपम श्रृंगार मिला

सुंदरता की प्रतिमूर्ति तुम

कहे कोई क्या परिभाषा

अंतरतम मे भी सुंदर तुम

हो मानवता की आशा

संगीत भरा अपना स्वर तू

नवयुग के साथ मिला ।।अपनी इस प्यारी .....

उन स्नेहिल आंखों से तुमने

सबपे ममता छलकायी

बनी प्रेरणा तू पत्नि बन

जीवन सफल बनायी

अंधकार मे ज्योति बनी तुम

तुमसे ही उत्साह मिला ।।अपनी इस प्यारी .....

तुममे वो सारी शक्ति है

बना दो स्वर्ग जहां को

हाथ मे है सबका बचपन

तुम दीप अखण्ड जला दो

शक्ति स्वयं की जान के जग मे

स्नेह को ही स्थान दिला ।।अपनी इस प्यारी.....

(137)

वो सुहानी सी बेला कभी आयेगी
गुनगुनायेंगे हम साथ होगी कोई

उठती है दिल मे तड़फ सी मगर
मै तन्हा हूं कोई नही हमसफर
पास वो होगी फिर प्यास न रह पायेगी
गुनगुनायेंगे हम .....

वो मुरत है जैसी ख्वाबों मे बसी
नहीं पास है पर वो होगी कहीं
साथ लेकर बहारों को वो आयेगी
गुनगुनायेंगे हम .....
रूक न सके जब बुलाऊं उसे
मुझे जान ले मै समझ लूं उसे
दिल मे अरमां लिये पास वो आयेगी
गुनगुनायेंगे हम.....

(138)

खत ने किया क्या दिल की
हालत क्या तुझे बतायें
जिधर भी देखूं मुड़कर
मुझे बाहें तेरी बुलायें
हसरत लिये थी दिल मे
और तुमने किया इशारा
झूम उठी हूं अब मै
जान के हाल तुम्हारा
मन मे है उमड़ती उमंगें
कब तू पास मे आये ।। जिधर भी देखूं .....

ये हवा खींच ले जाती
आंचल को संभालूं कैसे
हर बार संवारूं फिर भी
मुखड़े पे बिखरती जुल्फें
ये पवन शरारत करके
संदेश तेरा ही सुनाये ।। जिधर भी देखूं .....

मै तुझमें डूब रही हूं
है दिल तेरा मधुबन सा
करुं तुम्हें समर्पित जीवन
अरमान ये मेरे दिल का
किस मोड़ पे जाने तुमसे
अब मुलाकात हो जाये ।।जिधर भी देखूं .....

(139)

होठों के संग संग
मुस्कुरायेंगी आंखें
खुशियों मे डूबी
हर इक शाम होगी

वही सपनों की दुनिया
हकीकत मे आकर
खड़ी होगी इक दिन
मेरे सामने भी

फिर से वही ख्वाब
मैने भी देखा
किया मैने स्वागत
इक मनोरम सुबह का

(140)

ज्योति प्रज्वलित
स्वर्ण कलश पर
बरसे मोती
घर आंगन
वह भाग्य हमेशा
करता है इंतजार हमारा
हाथ बढ़ाकर
छू लो इसको
मेहनत का फल
उदित हुआ है
वर्षों पहले से लेकर
आज तक जो कर्म किये और
अपनों की शुभकामनाये
बड़ों का शुभ आशीष
फलित हुआ
छूकर पांव
उस परमशक्ति का
अब ग्रहण करो
यह स्वर्ग कलश।।

(141)

हवा मंद बहती मनोरम
संध्या का एकांत मनोरम

किसी के पास से चलकर
पवन प्रिय खुशबू भर लाती
उसी के दर्द को लेकर
सुरभि प्रिय गीत सुनवाती
गीतों का ये विश्व मनोरम।। हवा मंद बहती .....

जिसके नेह की गर्मी
संध्या देती सूरज बनकर
लाती हैं वे अंबर पर
उसी के केश लहराकर
केशों के ये मेघ मनोरम।। हवा मंद बहती.....

छुपाती लाज की लाली
वे झिलमिल नीले अंचल
उठा देती हवायें चल तब
झलकती चांद बन चंचल
चंदा की ये रश्मि मनोरम।। हवा मंद बहती .....

(142)

तरह तरह के फूल खिले हैं
खुशबू सबकी रखने की
इस धरती से प्यार है कितना
बात नही ये कहने की
अपना है संदेश सदा ही
जो आपस मे मिलाता है
रिश्ता है जिनसे धरती का
उन सबसे स्नेह का नाता है
मिलेगा तुम जितना बाटोगे
प्रेम नही है घटने की ।। इस धरती से .....

अपना घर है देश हमारा
इसे सदा बचाकर रखेंगे हम
रात अंधेरी फिर न आये
वतन के रक्षक रहेंगे हम
संकट मे हो देश अगर तो
साहस है कुछ करने की ।। इस धरती से .....

साक्षी है अपना अतीत भी
संस्कृति अपनी कहती ये
हमने शांति सदा चाहा है
प्रेम की पावन धरती मे
शांति को भी इंतजार है
प्रेम ज्योति जल उठने की ।। इस धरती से .....

(143)

लगता है सपना देखूं जो भी
मेरी आंखों मे समाते हैं
मौसम के ये सभी नजारे
दिल मे खुशी भर जाते हैं
चांदनी का ओढ़ के चादर
इस उपवन मे आई मै
करते स्वागत हिल के पौधे
खुश होकर मुस्काई मै
ठंडी हवा के झोके मेरे
तन मन को महकाते हैं।। मौसम के ये .....

उपर की डाली भरी फूलो से
मन कहता है छू लूं मै
फूल तो झूले डाल के संग मे
संग पवन के झूलूं मै
फूल गिराके पेड़ भी मुझपे
अपनी खुशी जताते हैं ।। मौसम के ये .....

आज का मौसम यहां पे लाया
अपने सभी श्रृंगारों को
क्यों न आया चांद भी संग मे
लेकर यहां सितारों को
दुधिया बादल नील गगन से
लगते मुझे बुलाते हैं ।।मौसम के ये .....

(144)

वो दूर आसमां पे धुंआ सा उठ रहा है
संध्या मे आज चलकर वो कौन आ रहा है

नीला सा एक चादर बिखरी पड़ी है लाली
मुख को छुपाये जैसे अब सो रहा हो कोई
ये रूप बना किसका फिर से बिखर रहा है
वो दूर आसमां .....

अंबर मे दिख रहीं हैं फूलो से सजी राहें
हाथों फूल लेकर गुजरा हो कोई जैसे
आहट है जाने किसकी कोई स्वर सा गूंज रहा है
वो दूर आसमां.....

अग्नि सी जल रही है पश्चिम के पत्थरों मे
अब आग लग चुकी है जैसे किसी हृदय मे
उजाला कहीं से मेरे सीने मे आ रहा है
वो दूर आसमां.....

(145)

हे सरस्वती मां हम पर
ये स्नेह बनाये रखना
मेरे उर के भीतर मे
तुम दीप जलाये रखना
माथे पे चमकता है वो मुकुट
हाथों मे ज्ञान की वीणा है
उज्ज्वल प्रकाश की पुंज हो मां
तेरे ही शरण मे जीना है
वीणा का स्वर झंकृत कर
इस हृदय को पावन करना।। हे सरस्वती मां.....

तेरे स्वर मे सरगम है मां
संगीत बना है तुमसे ही
ये विश्व तुम्हारी गोद मे है
हर ज्ञान सिखाया तुमने ही
ममता और ज्ञान का संगम
हम पर यूं बहाते रहना ।। हे सरस्वती मां.....

तेरे चरणों की करूं सेवा
तेरा वास हो मेरे कर्मों मे
कुछ फूल चढ़ाऊं श्रद्धा का
ये शीश झुका है चरणों मे
हे मां मेरा ये समर्पण
स्वीकार यूं करते रहना।। हे सरस्वती मां.....

(146)

ऐ भविष्य बता
तेरे गर्भ मे छिपा क्या है

अपनी ही गति से
बीत रहा है एक एक पल
क्या इन क्षणों को मै
पकड़ पा रहा हूं
इसी के जवाब पर तो बहुत कुछ
निर्भर है भविष्य
यही एक एक पल तो
निर्माण करेंगे भविष्य का
मेरा विवेक भी
यही कह रहा है मगर
फिर भी पूछता हूं कि
ऐ भविष्य बता
तेरे गर्भ मे छिपा क्या है

क्योकि जो पल बीत गया
उसकी यादें मेरे साथ हैं
जो मधुर अहसास है
ऊंचाईयों की
जो कटु सत्य है
गहराईयों की
कितना अप्रत्याशित था
मेरे जीवन का घटनाक्रम
आखिर कौन दिशा देता है
इन घटनाओं को
इसका उत्तर शायद मुझे
नहीं मिलेगा मगर

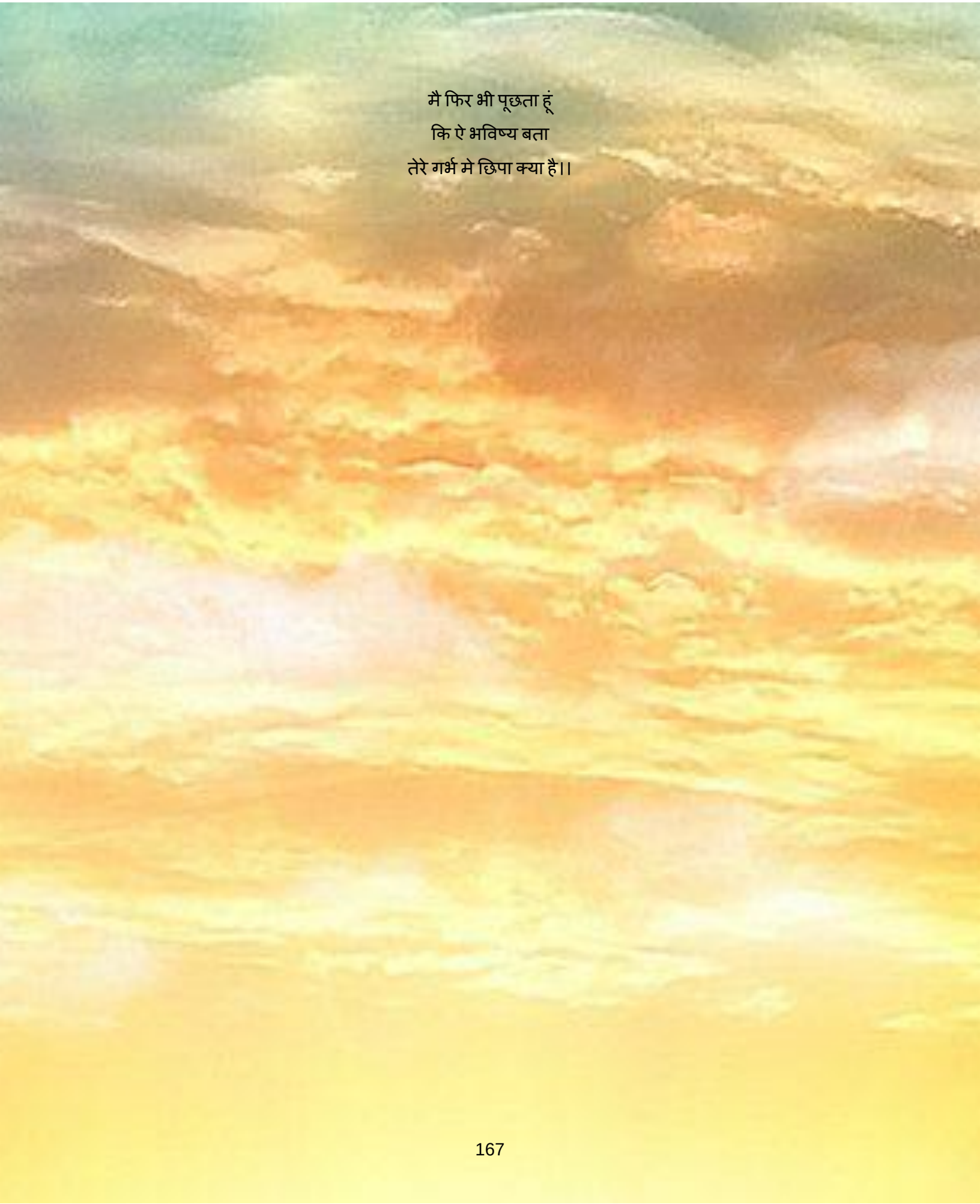

मै फिर भी पूछता हूं

कि ऐ भविष्य बता

तेरे गर्भ मे छिपा क्या है।।

(147)

हृदय
जो बंद है
आज के टेक्नालॉजी युग मे
जहां रोबोट को आदमी जैसा
और आदमी को रोबोट जैसे
बनाने के प्रयासों के बीच
हृदय के अहसासों
के लिए शायद
समय नही है हमारे पास
बंद हृदय के भीतर का
रास्ता ढूढ़ने की
ये छोटी सी कोशिश है मेरी
कविता जो याद
दिलाती है
उन भावनाओं की
जिन्हें शायद
हम भूल गये हैं
दरवाजा किस तरह से खुलेगा
एक बार खुल जाने बाद
अहसास भिगो देंगे आपको
भीतर के झरने का स्रोत
जैसे खुल जायेगा
कवितायें इसी की कोशिश है।।

(148)

जब कभी मन उदास हो
याद करना उन लम्हों को
जो बहुत खूबसूरती से आये हों
जब वक्त ठहर सा गया हो
जब किसी अपने ने
प्यार से पुकारा हो
याद कर लेना
उस सुहाने पल को
जब हुई थी उनसे
पहली मुलाकात
फिर वो शरारतें
जिसने उन्हें तुम्हारे
नजदीक लाने मे
बड़ी भूमिका निभाई थी
फिर तुम्हारे मन का मौसम
बदल जायेगा मेरे दोस्त
उसके यहीं कहीं आसपास
होने का अहसास
जीवन को भर देगा
संगीत से
इसलिये
याद कर लेना इन लम्हों को
जब कभी मन उदास हो ।।

(149)

नदिया मे एक नाव चली
नाव मे बैठे थे दो बच्चे
प्यारे प्यारे मन के सच्चे
नदिया मे था ज्यादा पानी
बहुत तेज बहता था पानी
सही सलामत वापस आये
उनको फिर सब गले लगाये
बड़ी विपत्ति आज टली
नदिया मे एक नाव चली ।।

(150)

नारी उपवास रहती है
व्रत करती है
ईश्वर को खुश करके
क्या मांगना चाहती है वो
अपने पति की लम्बी उम्र की दुआयें
अखंड सौभाग्यवती होने की दुआयें
हरितालिका व्रत पति के लिये
तो हलषष्ठी व्रत
अपने बच्चों की लम्बी उम्र के लिये
प्यार का सागर है वो
पति और बच्चों की खुशी
यही है उसकी अपनी खुशी
क्या पूरा परिवार
कभी समझ पायेगा ?
उसके योगदान को
घरेलू वातावरण को सुखमय
बनाये रखने के लिये
उसके मन की शांति और
मुस्कान के लिये
उसे क्या चाहिए?
पति और बच्चों का प्यार
मानव के रूप मे
एक गरिमामय जीवन
क्या उसकी इस कामना मे
हम उसका साथ दे पा रहे हैं
आखिर परिवार मे
मधुरता बनाये रखने की
जिम्मेदारी हमारी भी तो है ।।

(151)

मेरी सफलता की खुशी
मेरी सहेली की तरह
साथ रहती है हमेशा
एक मधुर संगीत की तरह
संगीत की धुन मे भी तो
आता है बदलाव
इस तरह लगता है जैसे
सहेली रूठ गई
तो उसे मनाना तो पड़ेगा ही
क्योकि ये अनबन तो
है, बस थोड़ी देर के लिये
मगर उसके बाद
वो खिलखिला उठेगी
और वातावरण मे फैल जायेगी
वो खुशी एक सुगंध की तरह
फिर मेरी सहेली
मेरी सफलता की खुशी
फिर से मेरी हो जायेगी
हमेशा के लिये ।।

(152)

जीवन के इस छोर से
उस छोर तक
जीते चले जाते हैं
क्योकि ये सफर है
एक मुकाम से
दूसरी मंजिल तक
बचपन बीता
जवानी आई
सोच बदली
कर्तव्य बदला
किसी का साथ छूटा
किसी का साथ पाया
कि संग संग चले हम
यद्यपि जीवन गति बदलती है
दिशा बदलती है
मगर आशा
सदा साथ निभाती है
क्योकि वही तो
जीवन की ज्योति है
प्रेरणा है
तभी तो होती है मुस्कुराहट
होंठो पे और
हृदय के भीतर उमंगें
कि आने वाला पल बेहतर होगा।।

(153)

जीवन है संभव जब तक हैं जंगल
बहुत काम के हैं हमारे ये जंगल

जंगल मे हाथी वहीं शेर भालू
नहीं होंगे जंगल कहां जायेंगे वो
हमारे लिये फिर से खतरा बनेंगे
कि जंगल नही तो हिरन भी न होंगे
जीवन है संभव .....

जंगल बिना कैसे बरसेगा पानी
कैसे मिलेगा हमे कल को पानी
बिना पानी भोजन के कैसे रहेंगे
बिना पानी हम खेती कैसे करेंगे
जीवन है संभव .....

नये पेड़ पौधे लगाते रहेंगे
जंगल के पेड़ो की रक्षा करेंगे
बादल को खीचेंगे ये पेड़ सारे
बरसेंगे बादल पेड़ होंगे जहां पे
जीवन है संभव .....

(154)

सपना एक पूरा हुआ
खुशी है इस तरह कि जैसे
हृदय उछल उछल जाये ।।

स्थायित्व मे हुई अचानक वृद्धि
लगता है कि भविष्य अधिक
मनमोहक हो गया ।।

खुशी मना लें आज बहुत पर
कल के लिये फिर एक सपना
गढ़ना होगा जीवन के लिये ।।

सपनो के बिना जीवन ऐसा है
जिस तरह रंगों के बिना तश्वीर
सपने ही तो रंग भरते हैं ।।

नया सपना पूरा होते तक
फिर से जिन्दगी मे रोमांच होगा
फिर से पूरा करने का संकल्प होगा।।

जीवन के इंद्रधनुषी रूप का
वो आनंद फिर से हृदय मे
अपना रंग गहरा जमायेगा ।।

इसीलिए जब एक सपना पूरा हुआ
तो खुशी मनाने के बाद फिर से
दूसरे सपने की तैयारी शूरू कर दो ।।

(155)

शक्ति, जिसे हम अर्जित कर सकें ।
शक्ति, जिसे जनहित मे अर्पित कर सकें।।

शक्ति, जो उपहास को चुनौती दे सके।
शक्ति, जो चढ़ने की राह बना सके।।

शक्ति, जो तन को फ़ौलादी बना सके ।
शक्ति, जो मन मे लावा जगा सके ।।

शक्ति, जो अथाह दुःख को झेल सके ।
शक्ति, जो असीम सुख का झरना बन सके ।।

शक्ति, जो गौरव को साथ ला सके ।
शक्ति, जो जीवन को उज्ज्वल बना सके ।।

शक्ति, जो हर हाल मे जीना सिखा सके ।
शक्ति, जो हर चेहरे पे मुस्कान ला सके ।।
शक्ति,जिसे हम अर्जित कर सकें ।
शक्ति, जिसे जनहित मे अर्पित कर सकें।।

(156)

आरती करो भगवान की
जिसने दिया ये जीवन
आनंद उठाने के लिये
ये विश्व है जैसे उपवन
अपने अपने काम करो ,और
सुख से जिओ हमेशा
जब तक है ,ये जीवन
कोई लक्ष्य बना लो अच्छा सा
खुशी खुशी बीते ये दिन
जीवन हो पावन निर्मल ।।आरती करो भगवान की .....

सेवा का मन मे भाव रखो
धरती को सींचो स्नेह से
ईश्वर का बस ध्यान करो
वो भर दे हमको प्रेम से
बादल जो आकर बरस गये
लहलहा उठे मेहनत की फसल।। आरती करो भगवान की ...

(157)

समय जो गुजर रहा है
हमें एक अनुभव दे जाता है
कुछ अहसास खुशी के
या कड़वे घूंट दुःख के
यादें इन सभी की
हर बार प्यारी लगती है
कभी पीछे मुड़कर देखें
उस बीते हुये कल को
जब कुछ अच्छा हुआ
हमारे साथ और
कुछ बुरा भी हुआ उस समय
पर आज हमसे
बिछड़ गये हैं
वे लोग और हम
नही भुला पायें हैं
आज तक क्योकि
वो सिखा गये थे
कभी हमको
जिन्दगी के अनजाने रहस्य
हम याद करते हैं उन्हें
और उनकी यादें
सूकून देती हैं हमें ।।

(158)

कितने और महाभारत
न जाने कब से जारी है
हर कोई यहां अर्जुन है
और दूसरी तरफ
सेना है कौरवों की
लड़ाई विचारधारा की
क्यों है इतनी भीषण
अगर लक्ष्य एक है
मानवता की रक्षा
नागरिकों की भलाई
सीमाओं पर सजग प्रहरी
हमारे वीर सैनिक
बाहर के दुश्मनों से
देश की रक्षा कर रहे हैं
अपने प्राण देकर भी
तब क्या हम
इतना भी नही कर सकते?
कि अपने अटूट मैत्रीभाव से
प्रेम की स्नेह की ममता की
भीनी भीनी फुहार से
देश के वातावरण को
शांतिमय बनाये रखकर
अपने वीर सैनिकों का
मनोबल बढ़ाये रख सकें ।।

(159)

रंगों का त्योहार होली
सबके तन को
सबके मन को
रंगने के लिये
आ गया झूम कर
चलो हम सब रंग जायें
एक हो जायें
सबके साथ मे
जहां कोई पराया नहीं
सभी अपने हैं
रंगों की फुहार मे
भीग जायें
सराबोर हो जायें
गुलाल की इंद्रधनुषी आभा मे
बांट लें खुशी और आनंद
इस मस्ती भरे माहौल मे ।।

(160)

तुम्हे पाने की
साथ रहने की
बड़ी तमन्ना थी मेरी
और तुम मुझसे
इतनी दूर चले गये
कि फिर से मिलने की
आस बाकी नहीं रही
फिर भी जाने क्यों
ऐसा लगता है मुझे
कि किसी शहर के
किसी मोड़ पर
यूं ही अचानक
तुम मिलोगे कभी
और मेरे कदम
ठिठक जायेंगे वहीं पर
ऐसे देखकर तुम्हें कि
जैसे वर्षों की
चाह पूरी हो गई
उसी एक मुलाकात के लिये
एक नजर के लिये
आज भी
मुझे तुम्हारा इंतजार है ।।

(161)

मेरी जीवन संगिनी
जब से मेरे जीवन मे आई
तो जैसे
एक नये सफर की
शुरूआत हो गई
तब से अब तक
एक एक पल जुड़ते जुड़ते
बीत गये हैं
इतने साल
फिर भी लगता है जैसे
कल की ही बात हो
क्योकि
आप सबकी दुआयें हैं
हमारे साथ
कि रिश्ते मे आज भी
वो गर्मजोशी कायम है
थोड़ी सी भी
कम नही हुई रूमानियत
कि सांसों मे आज भी
संगीत कायम है
और जिन्दा रहेगी हमेशा
हर कदम पर
उनके साथ रहने की ललक

(162)

हे ईश्वर! तेरी रचना
आज तेरे अस्तित्व का
सबूत मांगती है!!!
कोई तेरे एक रूप की
तो दूसरा तेरे किसी और रूप की
पूजा करके सजदा करके
तेरे ही दूसरे रूप का
विरोध करती है
नफरतों की हदें पार करती है
आज तेरी रचना
तुझसे ही जवाब मागने लगी
कि तेरे होते हुये भी
ऐसा क्यों है??
कि आज रक्त की नदियां
बहने लगी
अन्याय और क्रूरता की
सारी सीमायें
लांघी जा रही
कहीं भूख तो कहीं प्यास
क्यों नही मिल रही है मुक्ति
क्यों नहीं बता देते
कि कितना दयालू है
तेरी कृपा की प्यासी है
ये पूरी धरती
तुझे पुकारती है
कि हे दिव्य शक्ति
सबके आंगन मे
सुख और शांति की
बरसात कर दे।।

(163)

कह के गये हो तुम
जल्दी है आना
तड़पती मे जब से
हुआ तेरा जाना ।।
मेरे दिल को चुराया तुमने
चोरी का गम नही है
अपने दिल मे बसाया मुझको
आंखों मे बसाना भी है
आओ मुझे अपने
संग मे ले जाना ।।कह के गये .....

तेरी यादें चली आती हैं
जब भी बुलाती हूं
अपने दिल का दर्द
उन्ही को मै सुनाती हूं
पर तुम नही आते
क्यों ? मुझको बताना ।। कह के गये .....

कब आकर उन हाथों से
तुम आंसू पोछोगे ?
अपने दिल का हाल भी
मुझे कब सुनाओगे?
दोगे कब मुझको
फूलों का नजराना ? कह के गये.....

(164)

अब तो गरज के बादल
वर्षा को ला रहे हैं
बरसात आ गई ,सब
खुशियां मना रहे हैं
हरियाली की चादरें जो
धरती पे छा गई हैं
ये खूशबू भरी हवायें
हर दिल को भा गई हैं
रिमझिम बरसते बादल
आ आ के छा रहे हैं।।बरसात आ गई.....

बरखा का आज स्वागत
करते जो सबसे ज्यादा
मुस्कान है हृदय मे
मजबूत है इरादा
आखिर किसान है वो
जो हल चला रहे हैं।। बरसात आ गई.....

(165)

हे महाअस्तित्व !
मुझे अपनी कृपा से
सराबोर कर दे
कि प्रत्येक मानव मन को
उत्साह से भर दूं
उनके भीतर छिपी
अथाह ऊर्जा से
उनका परिचय करा दूं
वो शक्ति मेरे भीतर
पैदा कर दे
कि तेरे संदेश को
तेरी रचना के सामने
अनावृत कर दूं
तेरी संतान के हृदय मे
आशा का संचार कर दूं
जब होगा प्रत्येक मानव
स्वस्थ और कर्मठ
जब भरा होगा
प्रत्येक हृदय मे उत्साह
और समर्पण तेरे लिये
फिर आपस की रंजिश के लिये
फुर्सत ही नही होगी
किसी के पास
और प्रेम की गंगा से
सराबोर होगी
हमारी धरती ।।

(166)

मन की किसी

गहराई मे

छिपी हुई कोई

असीम सी अभिलाषा

न जाने मुझे खींचकर

कहां ले आई है

ये सपनों की दुनिया

छोटी सी बगिया मे

यादों की जमीन पर

फूलों के पौधे

सुंदर कोमल

सुगंधित पंखुड़ियां

तेज बरसता पानी

और चल रही हैं आंधियां

मगर सब कुछ

इतना मनोरम कि

बांध कर ही रख लें

कि दूर जाने को

जी नहीं चाहता

और फिर अचानक

मै खुद को पाता हूं

किसी घने जंगल मे

यथार्थ के धरातल पर

जहां फिर से मुझे

खो जाना है

यहीं कहीं

दुनिया की भीड़ मे ।।

(167)

अकेलापन भाने लगा है
किसी को पास बुलाने कोशिश
जी नहीं चाहता
आज मेरे मन मे
उदासी के बादल
फिर कहां से आ गये ?
कि मै अपने मन को
समझा भी नही पाता
कुछ दर्द से भरे गीत
याद आ रहे हैं
गुनगुनाने को और
मेरे स्वरों मे
अजीब सी कसक है
आंखों मे नमी सी है
हृदय मे कुछ कमी सी है
पर किसी मायने मे
ये कमी ये अकेलापन
मन को भाने लगा है ।।

(168)

तेरी एक मुस्कान
और
मेरी तन्हाई का
चले जाना
असंख्य गुलाबों का
अचानक खिल जाना
अपनी सुगंध से
एक बार फिर
मेरे अस्तित्व को
खुशियों से भर जाना
साथ ही मुझे
ये अहसास भी है
कि जवाब मे मेरा
मुस्कुरा देना
तुम्हारे लिये भी
थोड़ी सी खुशी का
कारण जरूर बनती है ।।

(169)

दिल मे तेरे बालम कब से रही मै
बदल क्यों गये तुम हूं तो वही मै
मेरे लिये तो सबकुछ तुम्हीं हो
तेरे लिये क्यों कुछ भी नही मै

देखे कभी तुम न आंसू हमारी
ताशों की गुड़िया तुम्हें मुझसे प्यारी
जरा दिल की सोचो सुन मेरे बालम
क्या इक खिलौना हूं कुछ भी नही मै
मेरे लिये तो सबकुछ .....

हंसकर भी रूठकर मनाकर भी देखा
हाथों से बोतल को छीनकर भी देखा
न सोचा मुझे भी जरूरत है तेरी
मुझे थाम लो टुट न जाऊं कहीं मै
मेरे लिये तो सबकुछ .....

पुकारूं तुम्हें सुन दया मुझपे कर दो
गिरती हूं पैरों पे दुःख दूर कर दो
आंसू लहू के क्यों तुम रुलाते
जरा सुन लो कब से कहती यही मै
मेरे लिये तो सबकुछ .....

(170)

काल की अनवरत गति
और समय की अथाह शक्ति
के आगे किसी की भी नहीं चलती
उम्र के अंतिम पड़ाव पर
कम होने लगती है
हमारे खून की गर्मी
और उसके साथ साथ
हमारा भी शक्तिहीन
होते चले जाना निश्चित है
शारीरिक मानसिक सामाजिक तौर पर
और पारिवारिक रूप से भी
हर किसी के साथ
गुजरता है पर
न जाने क्यों हमें
होती है इतनी आशा
हमारे अपनों से
जबकि हमने जो कुछ भी
अच्छा किया उनके साथ
वह उनके उपर
अहसान जैसा कुछ भी नहीं है
बल्कि
वह सब तो जरूरी था
अपने जिन्दा रहने के लिये
जो शक्ति मिली थी
कैसे मिलती
अपने कर्तव्यों के निर्वहन के बिना?
या यूं कहें कि हमने
जो भी किया
खुद के जिन्दा रहने के लिये किया

फिर उम्र के इस पड़ाव पर
जब इस जहान से ही
चले जाने का समय
इतना नजदीक है
बिना किसी राग-द्वेष के
मन को सदा के लिये
केवल ईश्वर से
जोड़ लिया जाये
कि सहारा केवल वही है
आखरी समय मे ।।

(171)

आंचल छुड़ाकर तुम यूं खिलखिलाकर
अब न छुपाओ मै दिलदार तेरा
झुकी पलकें तेरी ये इजहार करती
तेरे दिल मे अब तो है अरमान मेरा

कुछ भी नही थी ये मेरी जिन्दगी भी
मेरी खुशनशीबी है मुलाकात तुमसे
सदा साथ मेरे है तेरा ही साया
मेरी जिन्दगी मे तुम आई हो जब से
नही है अंधेरा अब संसार मेरा ।। झुकी पलकें तेरी .....

तारीफ तुम्हारी जो जुबां पे न आई
ये न समझना मै करता नही हूं
धरती से अंबर से तुम पूछ लेना
तुम्हे देखकर मै न देखा कहीं हूं
क्या तुम न करती थी इंतजार मेरा ।।झुकी पलकें तेरी .....

(172)

तुम्हे पा के दिल जो धड़कता रहा
खुशियां भी दिल से छलकती रही
जज्बात को कोई समझे जहां
साजन मेरे मुझको ले चल वहीं
दिल के अंदर से मेरे ये कहता कोई
जुर्म न हो जहां दिल लगाना कोई
कहीं पर तो होगा ऐसा जहां ।। साजन मेरे मुझको.....

जहाँ प्यार के कोई दुश्मन न हों
जहां पर कहीं ऐसे ताने न हों
हमको भी देंगे दुआयें जहां ।।साजन मेरे मुझको.....

भले ही बुलायें ये कलियां हमें
नहीं साथ देंगी ये गलियां हमें
खुशी से हमारे भी खुश हों जहां।।साजन मेरे मुझको.....

(173)

बीत गये दिन इंतजार के अब वो मेरी होगी
मेरे घर मे अब दिल मेरे सदा चांदनी होगी

सच्चे दिल से मैने पुकारा आज वही रंग लाया है
बाद मे इतनी तनहाई के दिन संयोग का आया है
उसी झील के पास मे शामें गुजरेंगी अपनी फिर से
मेरे लिये श्रृंगार करेगी मुस्कायेगी वो फिर से
बीत गये दिन.....

दिल दिया चाहा उनको है और तपस्या की इतनी
मांगो कहेगी सोचा था मै दूंगी तुम्हें चाहो जितनी
कहना चाहती थी वो लाली कान तक उसके आई थी
सारे जहां की खुशियां तो मुखड़े पे सिमट के आई थी
बीत गये दिन .....

आज मै कहता हूं दिल तुमसे ,बात मुझे करने देना
धड़क के तुम पहले जैसे हां चुप न मुझे रहने देना
बंधेंगे ऐसे बंधन मे फिर कैसे छोड़ के जायेगी
सिंदूर से उसकी मांघ भरूंगा वो दुल्हन बन जायेगी
बीत गये दिन.....

(174)

मुझको बता दो सनम पाऊंगा तुमको कहां
लगता है तेरे बिना सूना ये सारा जहां

जिस जगह तू रूठी मै मनाया था मै
मुस्कुरायी थी तू मुस्कुराया था मै
जगह खंडहर अब हुआ वो मेरी जां
प्रतीक्षा मे मै हूं तेरी शायद तू आये यहां।। मुझको बता दो ....

कभी ये लगा वो नादानी तो ना थी
पता ही नही तुमको माना है साथी
अक्सर ही चाहा मै बता दूं सबकुछ
कह न पाया मगर मै कहूंगा मिले तू जहां।। मुझको बता दो...

अगर प्यार मे ये उलझन न होती
शायद हमारी जुदाई न होती
दे दी है दिल तू न मालूम अगर हो
दिल मे देना जगह रहूंगा नही तो कहां।। मुझको बता दो...

(175)

जिनकी खुशी को खुशी अपनी माना
वे वादा किये और हैं भूले निभाना

ज्योति सी जलकर जिन्हें रोशनी दी
धुंआ ही केवल अब दिखता उन्हें हैं
सदा से हूं मरहम ,नमक माने अब वो
अपना समझ हमने चाहा जिन्हें हैं
सिवा उनके मेरा कहां है ठिकाना ।। जिनकी खुशी को.....

शायद उन्हे अब न ये याद है कि
जुदाई मे पलभर की तड़पन थी कितनी
जीवन मे तब गम का साया भी न था
अपनी सुहानी थी संध्या भी कितनी
सोचा भी न था कि होंगे बेगाना ।। जिनकी खुशी को.....

भले राह से वे भटक ही गये हैं
सांसे भी लूंगी मै उनको बनाकर
हिम्मत मुझे देंगी यादें उन्हीं की
मिलेगा जो मैने खोया है पाकर
आयेगा फिर से वो गुजरा जमाना।। जिनकी खुशी को.....

(176)

आसमां मे चांद आया खूशबू भी हवा लायी
चांदनी हो मगर दिल मे वो रात नही आयी
आ जाओ चली जाये तेरी ये जुदाई

आंखों के साथ मुख से पुकारा हमने
दिल से भी सनम तुमको बुलाया हमने
प्यारी सी तुमने अपनी सूरत न दिखायी
आसमां पे चांद .....

चांद ने भी न रहम की मुझपर
जला रहा है मेरे दिल को हंसकर
शीतल ये चांदनी भी शीतल न हो पायी
आसमां के चांद .....

बहलाऊं मन को कैसे ख्यालों मे
बातें भी हों कब तक सितारों से
सो गया है जग सारा और है भी तनहाई
आसमां पे चांद.....

(177)

सबकी है अपनी मंजिल अपने हैं रास्ते ।
रुकता कहां है कोई किसी के वास्ते ।।
तन पे लगी हो चोट तो शायद संभल जायें ।
मिलता नही है चैन मगर दिल के वास्ते ।।
चाहत है पाने की तो सहना है चोट भी ।
सह के है मुस्कुराना जीवन के वास्ते ।।
काजल की भले मंजिल आंखें रही मगर ।
होती नही हैं आंखें काजल के वास्ते ।।
घायल अगर हुये हैं तो इसमे गुनाह क्या ।
लहरों का मोल क्या है सागर के वास्ते ।।
टूटा दिल अगर तो टुकड़े न हो बाहर ।
केवल हंसी यहां है घायल के वास्ते ।।
पैगाम देते दर्द जो कायर को मौत का ।
लाते हैं शायरी वो शायर के वास्ते ।।

(178)

“कल की तरह दिन गुजर जायेगा
आज भी आप यूं मुस्कुरा दीजिये"
“मेरा भी दिल यूं बहल जायेगा
आप भी हमसे ऐसे मिला कीजिए "

“मिले आप हैं जब से हमको
देखे बिना चैन आता नहीं
आपकी हमसे नजरें मिलती नहीं तो
कोई काम हमको भाता नहीं
जरूरत नहीं हमको कागज की कोई
आप बस आंखों से ही लिखा कीजिये "
“मेरा भी दिल....."
“कल की तरह..... "

“लगती है प्यारी हमें ये जगह भी
यहां बैठकर आपको देखते हैं
दिल मे छुपाकर अपनी उमंगें
आयेंगे कब आप ये सोचते हैं
कभी आपसे दिल भरेगा नही
पास ही आप ऐसे रहा कीजिये "
“कल की तरह....."
“मेरा भी दिल....."

(179)

“इस अंधेरे मे केवल इक शमां तू है
यूं देखते जिन्दगी गुजरे ये आरजू है "
“हाथ फेरा है जो जुल्फ मे तुमने
सदा प्यार मिले तुमसे ये आरजू है"

“पहली नजर मे तुमको अपना माना था
फिर इंतजार जुदाई का इक जमाना था
साथ रहना अब तुम सदा के लिये
रहें हम तुम ऐसे मिलके ये आरजू है "
“हाथ फेरा है....."
“इस अंधेरे मे....."

“नहीं साया हो जिसमे तेरा ऐसा ख्वाब नहीं
तेरे साथ से बढ़कर मेरा कोई स्वर्ग नहीं
सह लूंगी साथ मे हर गम जहां का
बस रहूं मै तेरे दिल मे ये आरजू है "
“इस अंधेरे मे....."
“हाथ फेरा है ....."

(180)

हो गई थी संध्या
पर दहक रहा था
सूरज पेट मे
वह सुबह से न खाया बच्चा
अपनी मां से पूछता है
कि कब आयेंगे पिताजी मेरे
कब होगी शांत
पेट की ज्वाला
तभी दौड़ता है पिता को देखकर
पर निराश होता है
खाली हाथ पाकर
पिता समझाते हैं रुंधे स्वरों मे
कि उधार बंद कर दिया दुकानदारों ने
क्योंकि कर्जे ज्यादा हो गये हैं हमारे
क्योकि मंहगाई छू रही है आसमां को।।

(181)

मेरे जीवनसाथी मेरे प्रियतम
एक बार फिर
कल रात वही हुआ
आपका मेरे ऊपर चीखना
नाराज होना उन्हीं बातों पर
जो घटनायें घट चुकी हैं
बहुत पहले
जिन्हें मै बदल नहीं सकती
मेरे मायके वालों से
शिकायत है आपको
सच कहती हूं मेरे ईश
मुझे इस बात पर कभी भी
दुःख नहीं होता
जरा भी नहीं
पर आपका इस तरह
चीखने चिल्लाने से
आप खुद जो तनाव झेलते हो
जिसकी वजह से
आपका स्वास्थ्य खराब है
स्थिति और बिगड़ रही है
और मै बर्दाश्त नहीं कर पा रही हूं
मै आपको खोना नही चाहती
मै आपके बिना जीना भी नही चाहती
पर सोचा है???
कि हम दोनो के रहने पर
हमारे बच्चों का क्या होगा ?
अगर मैने भी तनाव पाल लिया
अगर मैने भी अपना स्वास्थ्य बिगाड़ लिया
कभी सोचा है कि ???

हमें आपकी कितनी आवश्यकता है ?
आपके बिना मुझे और हमारी बच्चियों को
दुनिया कैसी कैसी निगाहों से देखेगी ?
मै आपको कैसे समझाऊं कि
मै एक सुहागन के रूप मे
मरना चाहती हूं
इस दुनिया को छोड़ने पर
मुझे फिर से दुल्हन की तरह
सजाया जायेगा
मेरे अंतिम सफर पर
आप मेरी अर्थी के साथ चलोगे
मेरे प्रियतम
चार दिन की इस जिन्दगी को
क्यों न खुशी खुशी गुजार लें
क्योकि हो सकता है कि
फिर आपका और मेरा साथ
हो न हो अगले जन्म मे
मै इस जिन्दगी को भरपूर जीना चाहती हूं
आपके साथ
मुझे इतना बता दो
कि मै ऐसा क्या करूं
कि आप खुश हो जायें
शायद मै आपकी प्रेमिका नहीं बन पायी
पर आप मेरे पति हो और प्रियतम भी
मै आपकी सबसे अच्छी दोस्त बनना चाहती हूं
पर अब तक शायद मै असफल हो गयी हूं
मुझे एक मौका दे दो
मेरे पास चले आओ
मेरी गलतियों को माफ कर दो
मै एक बार फिर कोशिश करूंगी

आपको खुशी देने की
मै इंतजार करती हूं
एक बार फिर चले आओ
एक बार चले आओ ।।

(182)

मै हू तेरा भक्त मुझे कुछ कहने का अधिकार है
मै कानों से सुनूं ये कब तू आने को तैयार है

सिंहासन पर बैठे हो तुम देख रहे हों तमाशा
आंख कान सब बंद किये हो कौन दिलाये दिलासा
कृष्णा बनकर तुमने ही नारी की लाज बचाई
आज तुम्हारे कानों मे क्या देती न चीख सुनाई
मछली न्याय को देख पुकारे दिल तुम्हें कई बार है
मै कानों से सुनूं .....

अत्याचार से जलती धरती मतलब है क्या तुम्हें नहीं
धर्म ग्लानि पर आऊंगा क्या भूल गये जो तुमने कही
विध्वंस छोड़कर हां तुम कुछ और भी तो कर सकते हो
नफरत को मिटाकर धरती से तुम प्यार भी तो भर सकते हो
दुनिया बनाकर स्वयं मिटाना क्यों तुमको स्वीकार है
मै कानों से सुनूं .....

(183)

कितनी सुंदरता
बिखरी पड़ी है जहां मे
उसे अपने हृदय से
महसूस कीजिये ।।

मंजिलों पर पहुंचने की
हड़बड़ी सी क्यों है?
रास्तों का भी
थोड़ा मजा लीजिए
एक एक कदम
आगे बढ़ते हुये भी
महक इन हवाओं की
महसूस कीजिए।।

तड़फ जो भरी है
दिलों मे हमारी
वो मंजिल तक हमें भी
पहुंचा ही देंगी
मगर नजारे रास्ते के
इतने खूबसूरत है कि
नजर अब जरा सी
घुमाकर तो देखें
भले भटकना नहीं है
रास्तों पर
मगर इनकी खुशियों को
महसूस कीजिए।।

अपने हृदय मे
ऐसा संगीत भर लें
कि राहें भी हर पल

स्वागत करेंगी

वैसे भी राहें तो

गुजर ही जायेंगी

लेकिन फिर भी

सदा के लिये

एक अनुभव का

अहसास दे जायेंगी

महसूस कीजिए।।

कितनी सुन्दरता

बिखरी पड़ी हैं जहां मे .....

(184)

मुझे याद करना
जलकर भी कभी
आऊंगा मैं
जब आंधी चलेगी
तो आंचल बनकर
आऊंगा मै।।

दीपक!मै तुम्हारा
हमसफर न बन सका
तुम्हारी बाती
न बन सका मै
पर साथ चाहिये तेरा
थोड़ी भी चमक तुमको
भेंट कर सकूं मै
इससे बड़ा सौभाग्य
कहां मिलेगा मुझे
इससे बड़ी खुशी
कहां मिलेगी मुझे
सामने रहोगे मेरे
भले बाद मे
जल जाऊंगा मै।।
जब आंधी चलेगी .....

मेरे भीतर की अग्नि
तुमसे तेज है शायद
इसीलिए तुम
गर्म होकर भी
शीतल हो कितने
तुम बाहर जलाकर

राख कर दोगे
मगर अंदर के लिये
पानी नही बर्फ हो तुम
सहारा अभी दो मुझको
प्रलय की लहरें
उठेंगी जब
किश्ती बनकर
आऊंगा मै ।।
जब आंधी चलेगी.....

(185)

जंगल के फूल और पत्तियां
अपनी खुशी बांटते हैं
चाहे उन पर किसी का
ध्यान हो या न हो
और अंत मे
चुपचाप मिट जाता है
कली जो फूल बनकर
सबके लिये सुगंध बिखराती है
दीपक जो स्वयं जलकर
सबके लिये प्रकाश फैलाता है
पेड़ो मे जो फल लगते हैं
सबको स्वाद और संतुष्टि देते हैं
नदिया मे जो पानी बहता है
सबकी प्यास बुझाकर संतुष्टि देता है
हमारा जीवन भी इन्ही की तरह
सबके लिये कल्याणकारी बन जाये
अपने घर परिवार के साथ साथ
सबके लिये कुछ न कुछ कर पायें ।।

(186)

मीठी यादें
और स्वर्णिम सपने
हमारे मन को
ऐसी ऊर्जा से भर देते हैं
कि हम आनंद से
सराबोर हो जाते हैं
वहीं कड़वी यादें
एक कसक सी छोड़ जाती हैं
मगर हम जो भी
काम करते हैं
वर्तमान मे ही करते हैं
वक्त गुजर जाने के बाद
वह भूतकाल बनता जाता है
साथ ही भविष्य
पल पल
वर्तमान मे
परिवर्तित होता चला जाता है
हमारी क्षमताओ मे
निखार आने लगता है
और जैसे जैसे हम किसी भी
काम मे डूबते जाते हैं
उसे पूरी तन्मयता के साथ
करने लगते हैं
वैसे वैसे
भविष्य का
और भाग्य का भी
होता जाता है निर्माण।।

(187)

देह से अलग
अपना अस्तित्व तलाशती
नारी अपने अंर्तमन मे
कितने ही गुणों के मोती
संजोकर रखी हुई है
उसके लिये
मान्यता और सम्मान चाहती है
ऐसी मान्यता
संतान अपनी माता को
भाई अपनी बहन को
जरूर देते हैं
पर जहां तक अपने
सहयोगी सहकर्मी या साथी को
सम्मान देने का सवाल है
तो वहां
नारी के अस्तित्व पर
उसका दैहिक अपील
भारी पड़ता हुआ दिखाई देता है
जबकि
देह पति-पत्नी के बीच
प्रेम का
एक छोटा सा हिस्सा मात्र है
साथ ही नितांत निजी मामला है
और
स्त्री यह चाहती है
की लोग उसे
एक व्यक्ति के रुप मे देखें
न कि नारी देह के रुप मे
क्योकि इसी दृष्टिकोण से

नारी मुक्ति का
मार्ग प्रशस्त होता है
आत्मा के स्तर पर
भावना के स्तर पर
जो गुण
एक मानव होने के नाते
स्त्री मे विद्यमान है
उसकी स्वीकृति चाहती है
और उसकी इस चाहत को
पूरा करना
मानव समाज के लिये
असंभव तो बिल्कुल नही है
पर
उसे प्रयत्न जारी रखना होगा
और धैर्य के साथ
प्रतीक्षा करनी होगी
क्योकि धीरे धीरे ही सही
लोगों की मानसिकता मे
बदलाव जरूर आयेगा ।।

(188)

पहाड़ों पर
जंगलों के बीच
दूरस्थ ग्रामीण अंचल
जहां बिजली भी मिलती है
सौर ऊर्जा के पैनलों से
एक दूसरे से
काफी दूर दूर
बने हुये घर हैं
किन्तु यहां भी
शासकीय पाठशाला है
ये ऐसी जगह है
जिसे घोर इंटीरियल
कहा जाता है
लेकिन आज
उप्र आसमान को देखकर
ऐसा ख्याल आया
कि
ये तो वही सूरज है
जो शहरी इलाकों मे भी
उगता हैं
चांद भी तो वही होगा
और सितारे भी
यह भी धरती का
ऐसा हिस्सा है
जहां पर भी
लोग रहते हैं
और
यहां के लोग भी
हमसे अलग नहीं है

न ही बच्चों का I.Q.
किन्हीं दूसरे बच्चों से कम है!
फिर शिक्षा की रोशनी को
यहां तक पहुंचने मे
इतनी बाधाएं क्यो है ?
अब तो यहां के
हर गांव तक सड़कें
पहुंच चुकी हैं या
पहुंच ही जायेगी
फिर हमारे शिक्षक साथी
इन इलाकों मे
क्यों नहीं आना चाहते???
इन जंगलों की नैसर्गिक जलवायु
निमंत्रण देती है सबको
आपके भीतर के
जोश और जुनून को
और इंतजार करती हैं
कि यहां भी कोई आयेगा
अपने हाथों मे मशाल लेकर
और उस मशाल के
संपर्क मे आकर
यहां भी
जल उठेंगी
हजारों हजार मशालें
रोशनी होगी चारों ओर
और जंगलों मे
रहने वाले वनवासी भी
देश की मुख्यधारा का
हिस्सा बन सकेंगे ।।

(189)

पलाश के फूल
पूरे जंगल मे
छा गये
और
इस सुहावने दृश्य को
देखकर
मेरे मन मे
अनोखी अनोखी
उमंगों की जैसे
बारात सी चली आई
जिनका
स्वागत करते हुये
मै बहुत उल्लासित
हो रहा हूं
तुम्हारे साथ
और तेरी
मंद मंद मुस्कान
मेरे हृदय के
आनंद को
दोगुना कर रही है
क्योकि
ये बसंत और
तुम्हारा साथ
मेरे लिये
किसी भी त्यौहार से
कहीं ज्यादा
मायने रखता है ।।

(190)

तेरा आंचल और
तेरा श्रृंगार
सदा जगमगाता रहे
हमारे आंगन मे
सदा ऐसे ही
बहार रहे
मेरा और तुम्हारा
सदा साथ रहे
जीत ही लेंगे हम
हर परेशानी
और समस्या को
क्योकि तुम्हारा हाथ
सदा मेरे हाथों मे है
मै खुशनसीब हूं
कि
मेरे जीवन से
इतना बड़ा संकट
जो चला गया
ईश्वर की मेहरबानी है
मेरे दोस्तों एवं पूरे परिवार की
दुआ और आशीर्वाद है
और तू जो हरदम
हर कदम पर
मेरे साथ है
तो मेरे जीवन मे
तेरा इतना योगदान
तो जरूर है
कि तुमने मुझे मांग ही लिया
विधाता से

कि मेरी सांसों के चलने मे
तेरी प्रार्थना का
तेरे व्रत और उपवास का
परिणाम है , असर है।।

(190)

एक सपना जो मैने देखा
कि आज भी संभव है
हमारे लिये
अपने वातावरण को सुरक्षित रखना
अपने वायु ,जल , मिट्टी को
जो हमने प्रकृति ने
संजोकर रखा है
प्रकृति मे संतुलन बनाकर
विकास की सीढ़ियां चढ़ते हुये
हमें थकान का अहसास तक नहीं
तभी तो
लेकर आई है हवा
एक खुशी की लहर
वही जानी पहचानी
सदियों पुरानी
स्नेह की खुशबू
जो आज भी है नई जैसी
एक वरदान की तरह
संगीत मे नृत्य की तरह
नदियों मे कल कल बहते पानी
पक्षियों की आवाज मे खुशी
हवाओं मे गूंज रहा सरगम
धरती जैसे युवा हो गई फिर से
जीव जन्तु स्वच्छ पानी पीकर
घने जंगलों मे निर्भय होकर
टहल रहे निश्चिंत
और दुआ दे रहे हैं मानव को
कि संग संग का जीवन
भर गया आनंद से

फिर क्यों न
इन सपनों को
उतार लायें इस धरा पर
हम सब मिलकर
कि बन जाये ये धरती
स्वर्ग से भी सुंदर
हमेशा हमेशा के लिये ।।

(191)

मेरे दिल मे अभी भी सनम तेरी याद बाकी है
तेरे लिये कभी उमड़ी थी वो जज्बात बाकी है

मेरे पास मे तुम आकर आंखों से कही बातें
मुझको करनी थी मगर कब से वो बात बाकी है

आज भी तुम नहीं भूली मुझको आ भी जाओ सनम
जो तड़पती रही है अब तक वो शाम बाकी है

हमसे मिलते रहे थे यूं तो हजारों बार सनम
फिर भी लगता है कि तुमसे मुलाकात बाकी है

(192)

निभा सके जो किसी से प्रेम भी है जिन्दगी
वरना किसी कचरे का ,ढेर भी है जिन्दगी

कठिन परिश्रम के बाद तो , मुस्कान है साथी
वरना किसी नसीब का , खेल भी है जिन्दगी

फिसलती ही जा रही है ,समय के साथ साथ
शायद मुट्ठी मे भरी ,रेत भी है जिन्दगी

करते रहो सदा तुम ,भलाई के काम फिर
भिगो दे जो खुशी से , मेल भी है जिन्दगी

(193)

एक सुहानी सी सुबह
और फिर से
एक नई जीत की उम्मीद
उत्साह के साथ
आगे बढ़ने की ललक
किसी हार के बाद भी
खेल भावना के साथ
उसे स्वीकारने का साहस और
गिरने के बाद भी
हर बार
फिर से उठने की
अटूट इच्छाशक्ति
उन्नति और स्थायित्व के लिये
सपनों को एक बार फिर
नये सिरे से गढ़ने के लिये
कि खुशियों की बारात चली
चली आ रही है
और खड़े हैं
बाहें फैलाकर
दिलो मे मुस्कान और
आंखों मे चमक लिये हुये
नई मंजिलों के स्वागत के लिये ।।

(194)

इतनी बेचैनी क्यों है
अंतस मे
आखिर
क्या बदल रहा है
मेरे भीतर
जैसे कोई कविता
जन्म ले रही है
भावना का ऐसा तूफान
कि समझ मे न आये
वो संवेदनाएं
जो झकझोरती हैं
कि आज भी
मानव इतना मजबूर क्यों है
कि चाहकर भी
किसी के आंसू को मुस्कान मे
नहीं बदल पाता
जटिल से जटिल होता जा रहा है
मानव मन
और उसका अहंकार
कि मैत्रीभाव शायद
कहीं खोने लगा है!!!
आभासी दुनियां मे
बड़ी बड़ी बातें करने वाले हम
वास्तविक दुनिया मे
हृदय के अहसासों को
व्यक्त नहीं होने देते
संवेदनाएं सिसक रही हैं
बाहर आने के लिये
पर हम हैं कि

उसे जकड़े हुये हैं
शायद इसलिए
कि कहीं कोई हमें
"इमोशनल फूल" न समझ बैठे
किन्तु हृदय तो
शायद यही कह रहा है
कि जब भी और
जितना भी हो सके
किसी की
खुशी का कारण बन सकें ।।

(195)

वर्तमान मे जो खुशियां हैं
छोटी बड़ी जैसी भी हैं
हृदय से महसूस करो उसे
कि अमृत है ये प्राणशक्ति
पी लो इसे कि चेतना है ये
किसी नशे की मुर्छा नही हैं
कि हर तलाश को
विराम दे दो अभी के लिये
और जो कुछ भी है तुम्हारे पास
उसके और भी करीब आओ
कि यही वो आज है
जिसे जीने की अभिलाषा रही है
अपने आसपास को देखो
कि सरपट भागने से
कुछ भी हासिल नही होना है
अभी अपने मन को
इसी वर्तमान मे रख लो
अतीत की परछाईयों से दूर
भविष्य की चिन्ताओं से बहुत दूर।।

(196)

अपना नजरिया बदल लेंगे
तो मौसम बदल जायेगा
जिन्दगी का रंग
बदल जायेगा
वैसे भी ये जिन्दगी
"सफेद या काला"
केवल दो रंगों का
खेल नहीं है इसलिये
थोड़ी देर के लिये
"हां या नही" के लाजिक से
बाहर निकलिये
हर बार
किसी मुश्किल विषय पर
अपनी राय बनाने के बदले
पेंडिंग मे रख दीजिये उसे
फिर आंखों के सामने
आयेगा हर रंग
अपनी पूरी चमक के साथ
कि दिल पुकार उठेगा
कि जिन्दगी तेरे रंग हैं
कई हजार
कभी हंसाने हुये
तो कभी
आंसुओं से भरे
पर हर बार
बदल जाता है समय
कुछ भी नहीं ठहरता
पर हर रंग को
जीना है हमें

बड़ी शिद्दत से
कि हर रंग की उतनी ही
अहमियत है
हर किसी के जीवन मे
चाहे वह रंग दुःख के हो
या सुख के
आंसू के हों
या और भी कोई रंग
यहां तक कि
अगर चश्मा बदल लें
अपना नजरिया बदल लें तो भी
सामने का रंग
बदल जायेगा ।।

(197)

हर दिन हर पल
कुछ नया
सीखने की उत्कंठा भी
प्यास है
कभी ना बुझने वाली प्यास
कि सीखने का नया रोमांच
बढ़ते हुये उम्र के
थकान को भी
महसूस नही होने देता
क्योंकि हृदय मे भरी है भावना
खुद को बनाये रखना है
'काम का आदमी'
कि दूसरों के काम
आने की खुशी भी
गढ़ती है
जीवन की एक नई परिभाषा
और साथ ही साथ
हृदय मे भरती जाती है
कोई अनजानी सी
गहरी संतुष्टी

चन्द्र प्रकाश साहू

शिक्षा - B.E. (Electrical), D. Ed.

जन्मतिथि - 9 नवंबर 1970

पत्नी - अहिल्या साहू

संतान- प्रगति साहू, प्रतिभा साहू, प्राची साहू

शिक्षक (शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय)

उपलब्धियां

SCERT Raipur में "बालवाड़ी" और "स्कूल रेडिनेस" सहित विभिन्न प्रोजेक्ट में शामिल रहे

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान पेंड्रा में विभिन्न प्रशिक्षणों में मास्टर ट्रेनर के रूप में काम किया

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान पेंड्रा से प्रकाशित "नवनियुक्त प्रधान पाठक के लिए संदर्शिका" के लेखन में सक्रिय योगदान

रुचि - कवितायें लिखना, रेडियो में गाने सुनना, विभिन्न विषयों पर किताबें पढ़ना